रेल राजभाषा

अंक 135, अक्टूबर-दिसम्बर, 2023

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) नई दिल्ली

त्रैमासिक पत्रिका

रेल राजभाषा

वर्ष: 2023 अंक: 135 अक्टूबर-दिसम्बर, 2023

संरक्षक
जया वर्मा सिन्हा
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, रेलवे बोर्ड

परामर्शदाता
मोहित सिन्हा
महानिदेशक
(मानव संसाधन)

मार्गदर्शक
वी. जी. भूमा
अपर सदस्य
(मानव संसाधन)

सलाहकार
सुधीर कुमार
कार्यपालक निदेशक
(स्थापना, श्रम कानून)

प्रधान संपादक
डॉ. बरुण कुमार
निदेशक, राजभाषा

संपादक
रिसाल सिंह
संयुक्त निदेशक, राजभाषा

उप संपादक
सरिता दत्ता
उपनिदेशक, राजभाषा

सहायक संपादक
शशि बाला
सहायक निदेशक,
राजभाषा (पत्रिका)

संपादन सहयोग
अखिलेश कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

पता:-
राजभाषा निदेशालय
रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड)
नई दिल्ली-110001
ई-मेल:
patrikahindi@gmail.com

इस अंक में

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक/कवि	पृष्ठ
1.	शासन प्रशासन में हिंदी: स्थिति एवं सुधार	डॉ. बरुण कुमार	04
2.	अंगदान कार्य महान	राकेश बैंस	06
3.	व्यावहारिक बुद्धि	संकलन	07
4.	चीन से चाबुआ तक की चाय यात्रा	चितरंजन भारती (साभार)	09
5.	बिल्कुल अकेले	प्रियंका पाठक	13
6.	मूल्य	प्रिंस कुमार	15
7.	हमारी रोजमर्रा जिंदगी में रोबोट का बढ़ता इस्तेमाल	डॉ. रेखा जैन	16
8.	रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 148वीं बैठक की झलकियां		20
9.	रेलवे बोर्ड में आयोजित हिंदी पखवाड़ा		21
10.	क्षेत्रीय रेलों एवं उपक्रम में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन		25
11.	कुत्ते का कुत्तापन	प्रशांत प्रखर	27
12.	जलचित्र	शांतिलाल जोशी	28
13.	क्षमा का पर्व : पर्युषण	अभय कुमार जैन	29
14.	बूढ़ा पेड़	मंगलमूर्ति	31
15.	नदी हूँ मैं	गौरव चाँदना	35
16.	निकम्मी औलाद	रेखा शाह आरबी	36
17.	नववर्ष	सोहनलाल द्विवेदी (संकलन)	37
18.	आत्मदीप	हरिवंशराय बच्चन (संकलन)	37

सम्पादकीय

'रेल राजभाषा' का 135 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है आपके लिए यह अंक रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होगा। इसमें अलग-अलग विषयों पर लेख, कहानी, कविता आदि के साथ-साथ अन्य विषय संकलित हैं। साथ ही, इसमें हिंदी पखवाड़ा-2023 के अवसर पर आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रम और अन्य गतिविधियों जैसे कार्यशाला, संगोष्ठी, प्रतियोगिताएं, जयंती आदि की झलकियां दी गई हैं।

हिंदी पत्रिका का उद्देश्य रेलकर्मियों में हिंदी में भावों और विचारों की अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना है। परिष्कृत साथ उन्हें मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन की सामग्री प्रदान करना है। इस उद्देश्य से इस अंक में ज्ञान और मनोरंजन के वैविध्य से भरपूर सामग्री संकलित करके इसे पठनीय एवं आकर्षक बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है।

नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ, आगामी अंक के लिए आपके लेख, कविताएं, कहानियाँ संस्मरण आदि के साथ आपके सुझावों का भी स्वागत है।

(डॉ. बरुण कुमार)
निदेशक, राजभाषा, रेलवे बोर्ड

शासन प्रशासन में हिंदी : स्थिति एवं सुधार

अभी हमनें आजादी का सतहत्तरवाँ अमृत महोत्सव मनाया। देश ने तकनीकी, आर्थिक आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की है। देश पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था तो हो ही चुका है, पाँचवें से तीसरा स्थान हासिल करने की ओर तेजी से बढ़ रहा है। हिंदी देश की सबसे बड़ी भाषा है। इसका फैलाव देखें तो देश की 120 करोड़ की आबादी में यह 50 करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा है। अन्य भाषाभाषी, जिनके लिए हिंदी दूसरी भाषा है, यानी जो हिंदी समझते बोलते और लिखते हैं, मिला दें तो हिंदी के प्रयोक्ताओं की संख्या 90 करोड़ जा पहुँचती है जो पूरी जनसंख्या का 75% है। यह 2011 की जनगणना का आँकड़ा है।

देश सशक्त होता है तो उसकी भाषाओं को भी सशक्त होना चाहिए। लेकिन फिर भी हमें अपने देश में हिंदी को प्रोत्साहित प्रचारित करने के लिए चिंता करनी पड़ती है। देश की आबादी की तीन चौथाई में व्याप्ति रखनेवाली भाषा के बारे में हम विचार कर रहे हैं कि कैसे इसे बढ़ाएँ। जाहिर है कहीं कोई असंतोष, कोई संदेह हमारे मनों में है। हमने जो अपेक्षा की थी, वह पूरी नहीं हुई। क्यों नहीं हुई इसके कारणों की पड़ताल करके ही हम कुछ समाधानों, करने योग्य उपायों तक पहुँच सकते हैं।

आजादी के बाद हमने देश में अखिल भारतीय शासन-प्रशासन के लिए एक भाषा नीति बनाई। हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा दिया। उसका प्रचार-प्रसार करना सरकार का दायित्व निर्धारित किया। उसमें हिंदी के साथ हिंदीतर भाषाओं की प्रगति के लिए भी प्रावधान किए गए। हिंदी जो पहले केवल जनरुचि और जनस्वीकृति के बल पर अपना प्रसार पाती थी, अब इसे केन्द्र सरकार की नीतियों का भी सहारा मिला। इससे सरकार में इसका प्रयोग भी बढ़ा। साहित्य के अलावा इतर क्षेत्रों में भी हिंदी ने तेजी से अपनी पैठ बनाई। सबसे महत्वपूर्ण था शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाया जाना। प्राथमिक, माध्यमिक से लेकर उच्च शिक्षा में हिंदी के द्वार खुले। मानविकी के विषयों में (इतिहास, राजनीतिशास्त्र समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगोल आदि) तो स्नातकोत्तर से आगे शोध एवं अनुसंधान कार्य भी हिंदी में होने लगे। विज्ञान, वाणिज्य, प्रबंधन आदि तकनीकी विषयों में भी काफी दूर तक हिंदी माध्यम की पैठ हुई। धीरे धीरे सारे विषय हिंदी माध्यम में चले आने चाहिए थे। लेकिन उदारीकरण के बाद यह प्रक्रिया रुक सी गई। बल्कि उलट ही गई। पढ़ाई के विषयों में जहाँ हिंदी आई थी वहाँ से तो जाने लगी ही, संगीत मनोरंजन के क्षेत्र, जहाँ हिंदी और देसी भाषाओं का ही राज था, वहाँ भी अंग्रेजी पाँव बढ़ा रही है। उदारीकरण और वैश्वीकरण से उपजे दबावों और परिस्थितियों ने अंग्रेजी के पक्ष में शिक्षा से लेकर रोजगार एवं मनोरंजन तक के क्षेत्रों की धारा की दिशा ही मोड़ दी।

सरकार समाज का ही अंग है। समाज में

प्रयोग बढ़ेगा तो वह शासन में भी वह प्रतिफलित होगा। समाज में अगर शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी अगर पिछड़ती है तो उसका असर सरकार में उसके प्रयोग पर भी पड़ेगा। वैश्वीकरण या जिन भी दबावों से अंग्रेजी शिक्षा आज फैल रही है उसे रोकने या कम करने की क्षमता अगर किसी में है तो सरकार में ही। दुनिया के अन्य देशों के उदाहरण हमारे सामने हैं जो इस नई वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था में भी अपनी भाषाओं के बल पर आगे बढ़ रहे हैं और विकसित देशों में पहली पंक्ति में हैं।

हमने सरकार में अपनी ओर से हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए जिस नीति को अपनाया है वह है प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति। यह नीति विवादों को उत्पन्न होने या विवादों को बढ़ने से रोकती है लेकिन इसका दूसरा परिणाम यह भी हुआ है कि यह आगे बढ़ने के स्थान पर यथास्थिति में ही रहने की सुविधा प्रदान करती है। नीति के उल्लंघनों के प्रति भी सहनशील हो जाती है। किसी भी नीति के कार्यान्वयन में दबाव भी एक अनिवार्य कारक होता है। उसका परिमाण कितना और किन रूपों में हो सकता है, यह विचारणीय है। किंतु इसकी आवश्यकता तो है।

कम्प्यूटर ने पहले तो हिंदी के प्रयोग को घटाया था क्योंकि जो काम हाथ से हो रहे थे वे कम्प्यूटर पर फिर से अंग्रेजी में होने लगे। लेकिन अब हमने संक्रमण काल की वह अवस्था पूरी कर ली है। आज कम्प्यूटर हिंदी के प्रयोग में सहायक हो गए हैं। फोनेटिक कुंजी-पटल पर केवल बटनों को दबाकर वैसे लोग भी हिंदी लिख पा रहे हैं जिनके लिए हिंदी लिखने के लिए हाथ उस तरह से घुमाना (मूव करना) मुश्किल था। इंटरनेट का प्रयोग हिंदी में सर्वाधिक तेजी से बढ़ रहा है। मनोरंजन की दुनिया यूट्यूब, फेसबुक, ट्विटर आदि में तो हिंदी के प्रयोग का आँकड़ा केवल अपने देश में ही सबसे ऊपर नहीं, दुनिया में भी दूसरे या तीसरे नम्बर पर है। सरकार इसी क्षेत्र में अभी सर्वाधिक सक्रिय भूमिका निभा सकती है। कृत्रिम बुद्धि अभी इसका एक नया उभर रहा क्षेत्र है। हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में इसके प्रयोग के लिए निवेश बेहद फलदायी होगा।

उपर्युक्त बात से ही एक और बात निकलती है। भाषा के प्रयोग की आदत और संस्कार बचपन से ही पड़ते हैं। हमें कम्प्यूटर पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना है तो कुंजी पटल पर उसके टंकण को भी उतना ही महत्व देना होगा। इसकी शुरुआत विद्यालय स्तर से ही हो जानी चाहिए। फोनेटिक कुंजीपटल एक आपात उपाय है उसमें गति अत्यंत धीमी होती है और सरल वर्तनी के शब्दों के लिए ही सहायक होती है। इन्स्क्रिप्ट कुंजी पटल पर टंकण को विद्यालय, महाविद्यालय हर स्तर पर पाठ्यचर्या में अनिवार्य बनाना होगा। इन्स्क्रिप्ट में हिंदी ही नहीं कई भारतीय भाषाओं का टंकण संभव है। उसे अगर कोई एक भाषा में व्यवहार करना सीख लेता है तो उसी जानकारी से वह दूसरी

भाषा भी टाइप कर सकता है भले ही वह उस भाषा को न जानता हो। इसलिए इन्स्क्रिप्ट कुंजी पटल का प्रयोग हिंदी ही नहीं, अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग प्रसार में भी सहायक है।

ई-गवर्नेंस ने यह दिखा दिया है कि तकनीक प्रशासन में भी कितनी मददगार हो सकती है। केंद्र और राज्य की सरकारें विभिन्न भाषाओं में ई-गवर्नेंस की सुविधा प्रदान करती हैं तो स्वतः ही भारतीय भाषाओं को बल मिल जाता है। ई-गवर्नेंस को भारतीय भाषाओं में अधिकाधिक बढ़ाना चाहिए।

ऑनलाइन तुरत-फुरत अनुवाद अभी एक नया उभर रहा क्षेत्र है। हर्ष की बात है कि गृह मंत्रालय ने 'कंठस्थ' सॉफ्टवेयर के जरिए ऑनलाइन अनुवाद की सुविधा प्रदान की है। यह सुविधा अद्यतन रहे और तीव्र गति से काम करती रहे इसके प्रयास जारी रहने चाहिए। अनुवाद के लिए अन्य उपकरण भी विशेषकर डोमेन स्पेसिफिक पाठ के लिए विकसित और प्रचारित किए जाने चाहिए।

हिंदी के प्रयोग का आकलन विभिन्न रिपोर्टों के जरिए किया जाता है। प्रेरणा और प्रोत्साहन ने जिस अतिशय उदार और शिथिल वातावरण का निर्माण किया है उसमें आँकड़ों की विश्वसनीयता भी प्रश्न के घेरे में रहती है। आँकड़ों की वस्तुनिष्ठ जाँच की कोई व्यवस्था होनी चाहिए।

-डॉ. बरूण कुमार

निदेशक, राजभाषा, रेलवे बोर्ड

अंगदान, कार्य महान!

जीवन रक्षक है बड़े, सब हमारे अंग!
दुनिया से रूख्सत होने से पहले तुम!!
कर दान तुम इनका, कर जाओ कार्य महान!
ताकि मरने के बाद आये,
यह और किसी के काम!!
लाखों ऐसे मानव हैं दुनिया में!
नेत्रहीन है, लगाये बैठे आस!!
मिल जाये इनको नेत्र दान तो!
हो जाये इनका कल्याण!!
हमारे अंगों का जीवन में!
बहुत ज्यादा महत्व है!!
संख्यक बिन अंगो के!
देखे तड़पते प्राणी हैं!!
अंगदान अहसास बड़ा
अंगदान, कार्य महान!
ही स्वाभिमानी है!
मानवता के मिसाल की
बड़ी ही सुन्दर कहानी है!!
बाद मरने के सदा वो जीवित रहते हैं!
अंग प्रत्यारोपण जिनके हो जाते हैं!!
दिल धड़कता है उनका, दूजे के दिल में!
नैन किसी और को उजाला देते हैं!!
करके मानवता का यह कार्य महान!
एक जीव, बचाया और पचास!!
ऐसा पुण्य दान कोई, और जग में नहीं होना!
अपना सब कुछ देके दान, जीवन और किसी को देना!!

(राकेश बैंस)
अधिशासी इंजीनियर/निर्माण
उत्तर रेलवे, नई दिल्ली

व्यावहारिक बुद्धि

किसी जमाने में पं. विष्णुदत्त शास्त्री ज्योतिष के प्रकांड विद्वान हुआ करते थे। उनकी पहली संतान का जन्म होने वाला था। पंडितजी ने दाई से कह रखा था कि जैसे ही बालक का जन्म हो, एक नींबू प्रसूति कक्ष से बाहर लुढ़का देना। बालक का जन्म तो हुआ, लेकिन बालक रोया नहीं। तो दाई ने हल्की सी चपत उसके तलवों में दी, पीठ को मला और अंततः बालक रोने लगा। दाई ने नींबू बाहर लुढ़का दिया। उसके बाद वह बच्चे की नाल आदि काटने की प्रक्रिया में व्यस्त हो गई।

उधर नींबू लुढ़कते ही पंडितजी ने गणना शुरू कर दी। उन्होंने पाया कि बालक की कुंडली में "पितृहंता योग" है। अर्थात् उनके ही पुत्र के हाथों उनकी ही मृत्यु का योग! पंडितजी शोक में डूब गए। आत्मरक्षा और पुत्र को इस लांछन से बचाने के लिए वे चुपचाप बिना कुछ बताए घर छोड़कर चले गए।

सोलह साल बीत गए। बालक जब भी अपने पिता के विषय में पूछता, बेचारी पंडिताइन उसके जन्म की घटना तक बताकर चुप हो जाती। उसके आगे क्या हुआ उसे पता नहीं था।

अस्तु! पंडितजी का बेटा अपने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुये प्रकांड ज्योतिषी बना। उसी बरस राज्य में वर्षा नहीं हुई। राजा ने डौंडी पिटवाई "जो भी वर्षा के विषय में सही भविष्यवाणी करेगा, उसे मुँहमांगा इनाम मिलेगा। लेकिन भविष्यवाणी गलत साबित हुई, तो उसे मृत्युदंड मिलेगा।"

बालक ने गणना की और निकल पड़ा लेकिन जब वह राजदरबार में पहुँचा तो देखा एक वृद्ध ज्योतिषी पहले ही आसन जमाये बैठे हैं।

"राजन, आज संध्याकाल में ठीक चार बजे वर्षा होगी।" वृद्ध ज्योतिषी ने कहा।

बालक ने अपनी गणना से मिलान किया और आगे आकर बोला, "महाराज मैं भी कुछ कहना चाहूंगा।"

राजा ने अनुमति दे दी।

"राजन वर्षा आज ही होगी, लेकिन चार बजे नहीं, बल्कि चार बजने के कुछ पलों के बाद होगी।"

वृद्ध ज्योतिषी का मुँह अपमान से लाल हो गया। उन्होंने दूसरी भविष्यवाणी भी कर डाली, "महाराज वर्षा के साथ ओले भी गिरेंगे और ओले पचास ग्राम के होंगे।"

पर बालक ने फिर गणना की,"महाराज ओले गिरेंगे, लेकिन कोई भी ओला पैंतालीस से अड़तालीस ग्राम से ज्यादा का नहीं होगा।"

अब बात ठन चुकी थी। लोग बड़ी उत्सुकता से शाम का इंतजार करने लगे। साढ़े तीन तक आसमान पर बादल का एक कतरा भी नहीं था लेकिन अगले बीस मिनट में क्षितिज से मानो बादलों की सेना उमड़ पड़ी, अंधेरा सा छा गया, बिजली कड़कने लगी।

लेकिन चार बजने पर भी पानी की एक बूंद नहीं गिरी। लेकिन जैसे ही चार बजकर दो मिनट हुए, मूसलाधार वर्षा होने लगी!

वृद्ध ज्योतिषी ने सिर झुका लिया। आधे घण्टे की बारिश के बाद ओले गिरने शुरू हुए। राजा ने ओले मंगवाकर तुलवाये, कोई भी ओला पचास ग्राम का नहीं निकला। शर्त के अनुसार वृद्ध ज्योतिषी को सैनिकों ने गिरफ्तार कर लिया। राजा ने बालक से इनाम मांगने को कहा।

"महाराज, इन्हें छोड़ दिया जाये।" बालक ने कहा- राजा के संकेत पर वृद्ध ज्योतिषी को मुक्त कर दिया गया। "बजाय धन-संपत्ति मांगने के तुम इस अपरिचित वृद्ध को क्यों मुक्त करवा रहे हो?"- राजा ने कहा।

बालक ने सिर झुका लिया, और कुछ क्षणों बाद सिर उठाया, तो उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। "क्योंकि ये सोलह साल पहले मुझे छोड़कर गये मेरे पिता श्री विष्णुदत्त शास्त्री हैं।" वृद्ध ज्योतिषी चौंक पड़ा।

दोनों महल के बाहर चुपचाप आये। लेकिन अंततः पिता का वात्सल्य छलक पड़ा और फफक कर रोते हुए बालक को गले लगा लिया, "आखिर तुझे कैसे पता लगा कि मैं ही तेरा पिता विष्णुदत्त हूँ?"

"क्योंकि आप आज भी गणना तो सही करते हैं लेकिन सामान्य बुद्धि का उपयोग नहीं करते।" बालक ने आँसुओं के मध्य मुस्कुराते हुए कहा।

"मतलब?" पिता हैरान था।

"वर्षा का योग चार बजे का ही था, लेकिन वर्षा की बूंदों को पृथ्वी की सतह तक आने में कुछ समय लगेगा कि नहीं?"

"ओले पचास ग्राम के ही बने थे, लेकिन धरती तक आते-आते कुछ पिघलेंगे कि नहीं? और दाई माँ बालक को जन्म लेते ही नींबू थोड़े फेंक देगी, उसे भी कुछ समय बालक को संभालने में लगेगा कि नहीं? उतने समय में ग्रह संयोग बदल भी तो सकते हैं न? और... 'पितृहंता योग' 'पितृरक्षक योग' में भी तो बदल सकता है न?"

पंडितजी के समक्ष जीवन भर की त्रुटियों की श्रृंखला जीवित हो उठी। वे समझ गए कि केवल दो शब्दों के उस गुण के अभाव के कारण वह जीवन भर पीड़ित रहे और वह था – सामान्य बुद्धि (कॉमन सेंस)।

-संकलन

चीन से चाबुआ तक की चाय यात्रा

1757 के प्लासी के युद्ध ने अंग्रेजों को बंगाल में जमीन दी। 1764 के बक्सर युद्ध में उन्हें बंगाल में दीवानी और फौजदारी मिल गई, यानी राजा ही बना दिया। इस बंगाल का एक छोर पूर्वोत्तर दक्षिण में सिलहट था, तो दूसरा छोर उत्तर में कूचबिहार। पहले यह सैलानी बनकर बाद में व्यापारी बनकर पूर्वोत्तर में टहलने आने लगे थे। छोटे-बड़े कबीलों या राजतंत्रों में विभक्त पूर्वोत्तर की अपनी समस्याएं थी। जैसे कि आपसी रंजिश और युद्ध। सत्ता के लिए पारिवारिक संघर्ष। बर्मीज साम्राज्य का भी आतंक था। और उनके बीच अब एक सशक्त ब्रिटिश साम्राज्य था, जिसकी राजधानी कलकत्ता थी। और मद्रास तथा मुंबई प्रांत उसके प्रभामंडल में थे।

1776 में कूचबिहार ने भूटान के आक्रमण के समय अंग्रेजों से सहायता मांगी। भूटान आक्रमण को विफल करने के साथ ही कूचबिहार अंग्रेजों का मुरीद बनकर उनका शरणागत हो गया। इससे अंग्रेजों का बड़ा फायदा यह हुआ कि उन्हें अपने देश की आबोहवा के समान एक इलाका दार्जिलिंग मिल गया। साथ ही वह अब गुवाहाटी के नजदीक थे, जहाँ का अहोम वंश, जिसकी राजधानी गढ़गाँव (वर्तमान शिवसागर जिला) थी, अपने पारिवारिक संघर्षो में उलझा हाँफ रहा था। अंग्रेजों ने इन पर भी कृपा की, तो यह भी ब्रिटिश प्रभामंडल में आ गया था।

उधर सिलहट के समीप कछारी राजा अपने ही बंधु बांधवों और सेनापति से परेशान था। एक तरफ से पड़ोसी मणिपुरी राज्य तो दूसरी तरफ से दूसरा पड़ोसी जयंतिया राज्य उस पर नजर गड़ाए थे। उसने अंग्रेजों से सहयोग की याचना की, जो उसे नहीं मिली। तब तक 1823 में बर्मीज साम्राज्य का भयानक आक्रमण पूर्वोत्तर में हुआ। असम और मणिपुर की भयानक लूट-खसोट से पूरा पूर्वोत्तर थर्रा उठा। लगे हाथ कछारी राजा ने इन्हीं बर्मीज आक्रमणकारियों से सहायता क्या माँगी, वो लुटेरे घर में घुस गए। कछारी जनता और दरबारियों के अनुरोध पर अंग्रेज सक्रिय हुए। कलकता ही नहीं, मद्रास और मुंबई से भी ब्रिटिश फौजें आईं। फिर इन सब के साथ मिलकर और स्थानीय लोगों के सहयोग से अंग्रेजों ने यह युद्ध जीता और 1826 की संधि के बाद ये सभी राज्य अंग्रेजों के अधीनस्थ हो गए।

इतिहास की यह छोटी सी झलक इसलिए कि इसके बिना हम पूर्वोतर को नहीं समझ सकते। चाय के बागान और व्यापार को समझने के लिए यह जरूरी है। 1815 के आसपास कुछ अंग्रेज

पर्यटकों ने कलकता आकर यह सूचित किया कि ऊपरी असम के सीमांत में चाय के पौधों की झाड़ियां सी दिखी। और उन पर शोध किया जाना चाहिए। अंग्रेजों ने अपने-अपने स्तर पर काम भी शुरू किया। दबाव पड़ने पर भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड बैंटिक ने 1834 में चाय के बागान लगाने और उसके उत्पादन करने की संभावना तलाश करने के लिए एक समिति का गठन किया। इसके बाद कलकत्ता के धन्नासेठों, जिनमें से ब्रिटिश ही नहीं, बंगाली और मारवाड़ी तबके के लोग भी थे उन्हें असम में इसके लिए जमीनें और सुविधाएं देने की बात थी, आमंत्रित किया गया।

चार्ल्स एलेग्जेंडर ब्रूस

अंग्रेज जिन चीजों का अंतरराष्ट्रीय व्यापार करते थे, उनमें से चाय पत्ती का व्यापार प्रमुख था। वह चीन से चाय उठाते और पूरे यूरोप और अमेरिका में बेचते थे, जिससे उन्हें जबर्दस्त फायदा मिला था। चीन को चाय के बदले चाँदी के रूप में मूल्य चुकाया जाता था। चीन के सम्भ्रांत घरानों में अफीम की बेहद माँग थी। अंग्रेजों ने कुछ समय तक अफीम के रूप में चाय का मूल्य चुकाया, जो उन्हें बेहद सस्ता पड़ता था। मगर चीन के नये सम्राट ने अफीम की बढ़ती लत को खत्म करने के लिए अफीम को अवैध घोषित कर दिया।

अंग्रेज मिर्जापुर के जंगलों में पोस्ते के पौधे उगवाते और पटना में गंगाघाट के गोदामों में उससे अफीम तैयार होती थी, जो आगे चीन को आपूर्ति की जाती थी जब चीन ने चाय के बदले अफीम लेने से इंकार कर दिया, तो अंग्रेजों में मातम पसर गया और तब पटना के गंगाघाट पर चीन पर आक्रमण की योजना बनी। आक्रमण से चीन पराभूत हुआ। मगर युद्ध घाटे का सौदा ही होता है। ऐसे में अंग्रेज तलाश रहे थे कि काश चाय के पौधे इधर ही कहीं विकसित किए जाएँ तो बेहतर।

ईस्ट इंडिया कंपनी का एक नौसैनिक अधिकारी चार्ल्स एलेग्जेंडर ब्रूस 1824 में बर्मा युद्ध के समय सदिया नामक स्थान के ब्रह्मपुत्र नदी के बंदरगाह पर तैनात था। डिब्रूगढ़ से लगभग पचास मील आगे ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे है-सदिया। ब्रूस को एक गनबोट्स डिवीजन का कमांडर बनाया गया था। युद्ध समाप्त होने के बाद भी उन्हें नदियों में गश्त करते रहने का आदेश था। सो ब्रूस ने सदिया में ही अपना ठिकाना और बंगला बनाया था। उसके ही भाई रॉबर्ट ब्रूस ने उसे जानकारी दी कि असम के पूर्वी छोर (असम-अरुणाचल सीमा) पर उसने चाय के पौधों से मिलती-जुलती झाड़ियों को देखा है। इसकी पतियों को स्थानीय सिंगफो जनजाति चाय की तरह उबालकर पीती है।

और बस जैसे ब्रूस को अपने मतलब का एक सूत्र मिल गया। उसने सिंगफो जनजातियों से उनके गाँवों में जाकर भेंट की। उन पौधों को परखा। उनके बीज, पौधे आदि को सदिया लाकर अपने बंगले में उनकी नर्सरी बनाई। उसने इस काम पर पूरी तरह ध्यान देना शुरू किया। उसने चाय पतियों के नमूने दिल्ली और कलकत्ता की चाय समितियों को भेजा, जहाँ उसे अनुकूल उत्तर मिला। चाय विशेषज्ञों के मतानुसार यह अच्छी गुणवत्तायुक्त चाय पत्ती थी। कहाँ तो पहले ब्रूस पर ईस्ट इंडिया

कंपनी द्वारा अवैध ढंग से चाय बागान शुरू करने का आरोप लगाया जा रहा था। वहीं अब उसे 1836 में असम चाय बागानों का अधीक्षक बना दिया गया था।

हालांकि चाय की यह भारतीय किस्म चीनी चाय से कुछ अलग, यानी कड़क अथवा तेज थी। अंग्रेज अपना प्रयोग हर जगह करते थे। जहाँ सफलता मिलती, वहाँ काम आगे बढ़ जाता था। एक प्रयोग उन्होंने यह किया कि चाय में दूध और चीनी का मिश्रण किया, तो एक अलग प्रकार का स्वाद मिला। देखते- देखते इस चाय का फैशन पूरे विश्व में फैल गया। चीनी समुदाय आज भी इस बात पर हैरत करता है कि चाय जैसे पवित्र पेय में भी कोई चीज मिलाई क्यों जाती है? आगे चलकर यही चाय बागान पूरे भारत में विस्तृत हुए। पूरे भारत से यहाँ तात्पर्य दक्षिण भारत के अलावा, श्रीलंका और बांग्लादेश के चाय बागानों से भी है।

असम के डिब्रूगढ़ और तिनसुकिया के बीच अवस्थित है- चाबुआ। ईस्ट इंडिया कंपनी ने यहीं से विधिवत 1832 में चाय बागान का श्रीगणेश किया था। चाबुआ यानी जहां चाय बोई गई पहली बार और इस प्रकार यह नामकरण हुआ। इस प्रकार चाबुआ से चाय बागान का आरंभ माना जाता है।

फिर भी यह तथ्य था कि यह चाय चीनी चाय की तरह हल्की और परिष्कृत नहीं थी। इसके लिए एक प्रयास तो यही करना था कि चीन से पौधे और भी मंगवायें जायें। मगर वहाँ चीन में चाय का सारा व्यापार सम्राट के संरक्षण में था, जो बेहद ही संवेदनशील और दंडात्मक था। चाय के पौधों और बीज की चोरी, स्मगलिंग का एकमात्र दंड मौत थी। ऐसे में 1848 में रॉबर्ट फार्च्यून नामक एक बोटेनिकल स्पेशलिस्ट आगे आया, जो इस प्रकार के कारनामे कर चुका था। इसकी एक कहानी तो यही है कि उसे ब्रिटिश गुप्तचरों ने तैयार किया था। 1848 ई. में चीनी शहर शंघाई से कुछ दूर रॉबर्ट फार्च्यून एक नाई से अपना सर मुंडवाने आया। सर मूंडकर उसमें एक चोटी जोड़कर और चीनी कपड़े पहनकर वह पूरी तरह चीनी बन गया था। उसने अपना एक चीनी नाम सिंग हुआ भी रख लिया था। उसे सख्त चेतावनी दी गई थी कि वह गूंगे की तरह व्यवहार करे और कुछ नहीं बोले। चाय के व्यापार पर सैकड़ों वर्षो से चीन का एकछत्र अधिकार था। और वह किसी भी प्रकार इसके राज को दुनिया के आगे उजागर नहीं करना चाहता था। और उसी में सेंध लगाने का काम फार्च्यून को करना था। ऐसे में यदि वह पकड़ा जाता, तो उसकी सजा सिर्फ मौत ही थी।

चीन के उन राज्यों में, जहाँ चाय होती थी, वहाँ वह लगभग तीन वर्षों तक रहा। उसे उस जमाने में ईस्ट इंडिया कंपनी से प्रतिवर्ष पाँच सौ

पौंड मिलते थे, ताकि वह अपने मकसद में कामयाब हो जाए। वह हुआ भी। उसने बेहतरीन चाय के पौधों और बीज के अलावा उन्हें उगाने और खेती करने की तकनीक सीखी। अब उसका अगला कदम उन चाय के पौधों को चुराकर हिंदुस्तान ले जाना था। और इसमें जोखिम ही जोखिम थे। फार्च्यून ने बिना हिम्मत हारे सभी काम किये। चाय के पौधों को स्मगलिंग द्वारा हिंदुस्तान तक भिजवाना आसान नहीं था। फिर भी उसने उन्हें भिजवाया। उसे लगा कि यह पर्याप्त नहीं है। शायद हिंदुस्तानी लोग इसकी पैदावार कर नहीं पाये। तो उसने कुछ चीनी किसान, मजदूरों को हिंदुस्तान भिजवा दिया।

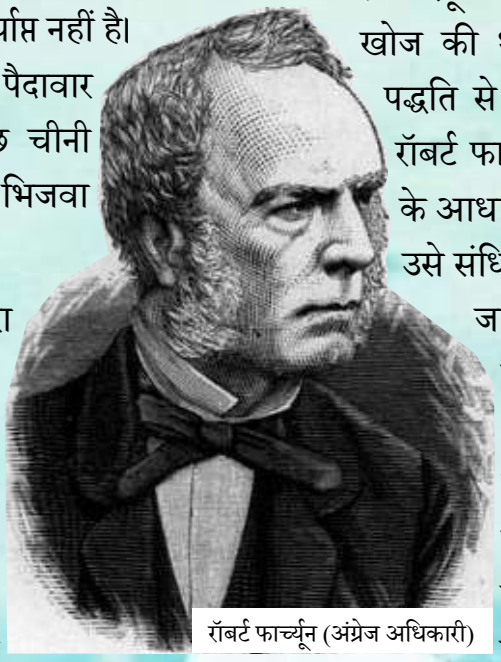
रॉबर्ट फार्च्यून (अंग्रेज अधिकारी)

उसका काम अभी पूरा नहीं हुआ था। उसे चाय के पौधों के उगने के मौसम, पत्तों को तोड़ने और सुखाने, तैयार करने और रखरखाव की विधि सीखनी थी। इसके लिए वह महीनों की यात्रा कर चीन के उस दुर्गम क्षेत्र में पहुंचा, जहाँ चाय के कारखाने थे। वह वहाँ यह देखकर आश्चर्य में पड़ गया कि हरी चाय और काली चाय, दोनों एक ही पौधे से तैयार किये जाते हैं।

चुपचाप अपना काम संपन्न करते हुए वह चीनी सुरक्षाकर्मियों से निगाह बचाते हुए चाय के पौधे, बीज और मजदूरों को भी असम की ओर भेजता रहा। ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी निगरानी में असम के विभिन्न इलाकों में चाय के पौधे लगाने शुरू कर दिये। मगर यहीं फार्च्यून से गलती यह हो गई कि वह जो कुछ भी चीन से आयात करके लाया था, वह चीन के ठंडे प्रदेशों से थे। जबकि असम का इलाका अपेक्षाकृत गर्म था। और इसलिए यह पौधे यहां सूख गये। हाँ, दर्जिलिंग के ठंडे इलाकों में इसे उपजाने में कामयाबी मिली। और वहाँ जो चाय तैयार हुई, वह विशिष्ट प्रकार की थी।

लेकिन संयोग की बात है कि असम अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती इलाकों के जंगलों में रॉबर्ट ब्रूस ने जिन चाय की झाड़ियों की खोज की थी, वह चीनी तकनीक और पद्धति से जल्द ही तैयार होने लगे थे। रॉबर्ट फार्च्यून के बारे में हाल के शोध के आधार पर विद्वान स्थापना देते हैं कि उसे संधियों के तहत भेजा गया था। वह जासूस नहीं था। जो भी हो, देखते ही देखते आज का पूर्वोत्तर और कल का असम चाय बागान से लहलहाने लगा था। इसके अलावा उस समय बांग्लादेश और श्रीलंका भी ब्रिटिश भारतीय उपनिवेश में समाहित थे, वहाँ भी चाय की पैदावार ने रंग दिखा दिया था।

ईस्ट इंडिया कंपनी अपने इस वृहद् भारतीय उपनिवेश की चाय पर इतराने लगी थी। उधर चीन का चाय पर से एकाधिकार खत्म होते ही उसके व्यापार को जबरदस्त धक्का लगा था। सचमुच चीन से चाबुआ तक की यह चाय-यात्रा, यात्रा नहीं संघर्ष और सफलताओं की दास्तान है।

(साभार) चितरंजन भारती

बिल्कुल अकेले

बलिराज चौबे के यहां जोर-जोर से थाली पीटी जा रही थी। बलिराज चौबे की मां दुलारी चाची गांव के हर बड़े-बूढ़े के पाँव छू रही थी। खुशी से झूमते हुए सबको बता रही थी- "आज बलिराज को बेटा हुआ है।" राधा और गौरी ने भी दादी से पूछा- क्या बात है दादी सब के पैर काहे छू रही हो? दुलारी चाची ने दोनों का माथा चूमते हुए कहा–"तेरा भाई आया है री।" गौरी और राधा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। दोनों जिद करने लगी - "हमें दिखाओ ना दादी! हमें दिखाओ ना!" दादी ने जवाब दिया - "अरे अभी तेरी मां अस्पताल में है। कुछ ही दिनों में मेरे घर के चिराग को लेकर आएगी, तब जी भर के देख लेना।"

दुलारी चाची घर पर सोहर गाने के इंतजाम में जुट गई। चटाई बिछाई जाने लगी, ढोलक-झाल का इंतजाम किया और गीत गाने वाली फुलेश्वरी को सभी महिलाओं को इकट्ठा करके आने के लिए बोल दिया। महिलाएं जुटी और शुरू हो गई गवनई – "सिया रानी के दुई ललनवां, विपिन कुटिया में.....।" उसी समय शहर से बलिराज चौबे भी पधारे। मां के पैर छुए, प्रणाम काकी प्रणाम चाची, प्रणाम दीदी कहते हुए दालान में चले गए। बलिराज को दो बेटियों के बाद बेटा हुआ था, इसीलिए घर में उत्सव का माहौल था। सभी ने तय किया कि बहुत धूमधाम से छठी-बरही होगी। चारों गांव को बुलाया गया, जब भी कोई व्यापक आयोजन होता चारों गांव के लोग सम्मिलित होते हैं। सभी अपने ही गोतिया भाई थे। चारों गांव में कान्यकुब्ज ब्राह्मण चौबे की संख्या बहुतायत मात्रा में थी। बहुत ही खुशी से, धूमधाम से बरही संपन्न हुआ।

बलिराज बाबू सरकारी कर्मचारी थे। घर में खेती-बाड़ी भी काफी थी, कहीं से कोई कमी नहीं थी। वह अपनी बेटियों को बहुत प्यार करते थे। लेकिन जब से बेटा आया था तब से उसे ही ज्यादा मानते और दिन-रात उसी की खुशामद में लगे रहते थे। सही-गलत उसकी सब फरमाइशों को पूरा करते। बेटे की सेहत का खास ख्याल रखते और मिठाई भी शुद्ध देसी घी में बनवाकर खिलाते। शहर के सबसे महंगे स्कूल में उसका नाम लिखवाया। महंगे कपड़े, महंगे जूते, मंहगे बैट-बॉल यानी बेटे ने जिस चीज पर हाथ रख दिया उसकी हर चाहत का वह बढ़-चढ़कर ख्याल रखते। उनके गांव के साथी टोकते कि "इतना प्यार ना उड़ेल दीजिए की बेटा

बिगड़ जाए।" बलिराज बाबू लापरवाही से बोलते "अरे छोड़िए क्या चीज की कमी है मेरे यहां। इतना सब तो है, सब उसी का तो है। खाने, खेलने, पहनने की उम्र में खुश नहीं रहेगा तो कब रहेगा।"

दोनों बेटियां भी अपनी पढ़ाई समाप्त कर बंगलुरु से वापस आ गई। राधा ने इंजीनियरिंग किया था तो गौरी ने एग्रीकल्चर की पढ़ाई की थी। घर आने के पहले कई जगह नौकरी के लिए इंटरव्यू भी दे चुकी थी। फिर वह शुभ दिन आया जब दोनों बहनों की नौकरी भी बंगलुरु में ही लग गयी। वह दोनों जब छुट्टियों में घर आई तो बलिराज बाबू ने कहा कि "बिटिया अब हम आप लोगों की शादी करना चाहते हैं, क्योंकि रिटायरमेंट में कुछ ही महीने बचे हैं। आप लोगों की इच्छा थी कि हम लोग बाहर पढ़ने जाएंगे वह भी पूरी हो गई। नौकरी भी आप लोगों की लग गई। मैं भी अब अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहता हूं।" दोनों ने शादी के लिए हामी भर दी। अच्छे और संस्कारवान लड़के भी मिल गये। बड़ी धूमधाम से राधा और गौरी की शादी हो गई। बेटियों को मां-पिता से ज्यादा लगाव था। प्रतिदिन उनका समाचार लेती रहती। जब भी छुट्टी मिलती माता-पिता से मिलने आ जाती। बलिराज बाबू हर बार उनकी बहुत बढ़िया से विदाई करते।

बलिराज बाबू रिटायर हुए तो पूरा परिवार इकट्ठा हुआ। बेटियों के साथ दामाद और उनके बच्चे भी आए। सभी लोग जब जाने लगे तो उन्होंने सबकी अच्छे से विदाई करनी चाही तो बेटे ने कहा "पापा अब आप रिटायर हो गए हैं, मुट्ठी बांधिए। दोनों बहनोंके लिए पहले ही काफी कर चुके हैं। उन्हें पढ़ाया-लिखाया, अपने पैरों पर खड़ा करवाया, अच्छे घरों में ब्याह किया। अब क्या सारी संपत्ति उन्हें ही दे देंगे। अब तो हमारे बारे में सोचिए।

बेटे की बात सुनकर बलिराज चौबे थोड़ा चौंके और बोले "सब तो तुम्हारा ही है, तुम्हारे आने के बाद मैंने बच्चियों के प्यार- दुलार में कमी कर दी। सारा प्यार तुम पर ही उड़ेल दिया फिर भी तुम शिकायत कर रहे हो। तुम्हारे कहने के पहले ही तुम्हारी हर ख्वाहिश मैं पूरी कर देता था फिर भी तुम्हें मुझसे शिकायत है। मैं रिटायर हो गया तो क्या हुआ। उसके बाद पेंशन तो मिलेगी ही और इतनी सारी खेती-बाड़ी है। कमी किस चीज की है कि मैं अपनी बेटियों और उनके बच्चों को अच्छे कपड़े ना दूं, उनकी अच्छे से विदाई ना करूं। अब तुम मुझे सिखाओगे कि मुझे क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए।" बेटा पलट कर बोला "जितना कह रहा हूं उतना ही सुनिए, आपको फिजूलखर्ची की आदत पड़ गई है। लाइए आप अपना एटीएम कार्ड मुझे दीजिए।" बलिराज चौबे थोड़ा सकपकाए। पास बैठी पत्नी बोली "बबुआ क्या कर रहा है तू?" बेटे ने मां को भी झिड़क दिया और पिता की जेब से जबरन एटीएम कार्ड निकाल लिया। बलिराज बाबू के बैंक खाते में पेंशन तो प्रत्येक माह जाती है, मगर उनके हाथ नहीं

लगती। सारा पैसा बेटा निकाल लेता है। कुछ मांगने पर भी नहीं देता। कभी बलिराज चौबे गुस्से में कुछ बोल देते हैं तो उनकी पिटाई भी कर देता है और खाना भी बंद कर देता है। उन दोनों को ना किसी से मिलने -जुलने देता है और न ही किसी को घर पर आने देता है।

लाचार पति-पत्नी की कुछ भी समझ में नहीं आ रहा वह क्या करें? कहाँ जाए? भाई के बर्ताव को देख बहनों ने भी आना-जाना छोड़ दिया है, क्योंकि उनके आने पर भी उसने पाबंदी लगा दी है। बेटे के बर्ताव को समय का खेल मान चुके बलिराज बाबू और उनकी पत्नी भीतर से टूटने लगे हैं। गांव के लोगों से भी अपनी व्यथा नहीं कह सकते। दोनों चुपचाप एक दूसरे को देख कर जीते हैं। बिल्कुल अकेले।

प्रियंका पाठक
गरखा, सारण, बिहार

कार्मिक एवं प्रशिक्षण मंत्रालय द्वारा आयोजित अंतर-मंत्रालय संगीत, नृत्य एवं लघु नाट्य प्रतियोगिता 2023-24 में राजभाषा निदेशालय, रेलवे बोर्ड से श्रीमती बैशाली भट्टाचार्जी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने लोकगीत गायन में कांस्य पदक अर्जित किया।

मूल्य

पूछो अपने अन्तर्मन से,
तेरा ध्यान कहाँ है?
जिसके लिए तू आया जग में,
वो सम्मान कहाँ है?

मूल्यों का निर्धारण तेरा,
तेरी खुद की शान कहाँ है?
स्थापित जो आदर्श थे तेरे,
उसका मान कहाँ है?

जो कुछ छेड़ा है तूने,
ये तेरा तान नहीं है।
और अभी तक जो पाया है,
सच्चा सम्मान नहीं है।।

जो कुछ भी दर्शाया तुमने,
क्या झूठी शान नहीं है?
और दंभ है जिस ज्ञान का
क्या सच्चा ज्ञान यही है।

जहाँ बैठे हो शयनमुद्रा में,
क्या तेरा स्थान यही है?
हर-पल, पल बीता जाता है,
क्या तुझको भान नहीं है।

कठोर परिश्रमी भुजदंडो में,
पहले सी जान कहाँ है?
समय को पीछे छोड़ दे जो,
वो तेरा विमान कहाँ है?

है आन तुझे मानव होने का,
स्वाभिमान जगाना होगा।
पाना होगा निर्दिष्ट लक्ष्य,
सम्मान बचाना होगा।

प्रिंस कुमार
कनिष्ठ अनुवादक, पूमरे, डीडीयू

हमारी रोजमर्रा जिंदगी में रोबोट का बढ़ता इस्तेमाल

हमने कभी सोचा नहीं था कि जिन मेलों के लिए लोग त्योहारों का इंतज़ार करते थे, वो शहर से वर्चुअल दुनिया में पहुंच जाएंगे। बीतते दिन के साथ टेक्नोलॉजी विकसित हो रही है। हमारी रोजमर्रा की लाइफ में इनका इस्तेमाल भी बढ़ता जा रहा है। कल को आप कोई सामान ऑनलाइन ऑर्डर करेंगे, तो संभवतः इसकी डिलीवरी एक रोबोट लेकर आपके घर आएगा।

देखा जाए तो स्वचालित रूप से चलने वाली मशीन को रोबोट कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए ऑटोमोबाइल कंपनी एक कार बनाने के लिए कई तरह की मशीनों का उपयोग करती है। इन में सिर्फ कार के ढाँचे को मशीनों में सेट किया जाता है और उसके बाद मशीनें यानी रोबोट स्वयं कार्य करके कार बना देते है। इसमें बहुत कम व्यक्तियों की जरूरत पड़ती है।

आज, वाणिज्यिक और औद्योगिक रोबोट (industrial robot) व्यापक रूप से सस्ते में और अधिक से अधिक सटीकता और मनुष्यों की तुलना में ज्यादा विश्वसनीयता के साथ प्रयोग में आ रहे हैं। उन्हें ऐसे कार्यों के लिए भी नियुक्त किया जाता है जो कि मानव लिहाज़ से काफी खतरनाक, गन्दा और उबाऊ कार्य होता है रोबोटों का प्रयोग व्यापक रुप से विनिर्माण (manufacturing), समान और गठरी लादने, परिवहन, पृथ्वी और अन्तरिक्षीय खोज, सर्जरी, हथियारों के निर्माण, प्रयोगशाला अनुसंधान और उपभोक्ता तथा औद्योगिक उत्पादन के लिए किया जा रहा है।

आमतौर पर लोगों का जिन रोबोटों से सामना हुआ है उनके बारे में लोगों के विचार सकारात्मक हैं घरेलू रोबोट (Domestic robot) सफाई और रखरखाव के काम के लिए घरों के आस पास आम होते जा रहे हैं। बहरहाल रोबोटिक हथियारों और स्वचालन के आर्थिक प्रभाव को लेकर चिंता बनी हुई है, ऐसी चिंता जिसका समाधान लोकप्रिय मनोरंजन में वर्णित खलनायकी, बुद्धिमान, कलाबाज़ रोबोट के सहारे नहीं होता अपने काल्पनिक समकक्षों की तुलना में असली रोबोट अभी भी सौम्य, मंद बुद्धि और स्थूल हैं।

इन रोबोटों में स्वीपर्स, वैक्यूम क्लीनर, पूल क्लीनर आदि तरह-तरह के कार्य करने वाले रोबोट आते हैं। हालांकि अब घरेलू रोबोटों में शिक्षा, मनोरंजन या चिकित्सा आदि जैसे सेवा देने वाले रोबोट भी आ रहे हैं।

बढ़ती मानवीय जरूरतों और इच्छाओं के कारण आज रोबोटों का काम इन्सानों के

लिए बहुत ही ज्यादा प्रासंगिक है। कई क्षेत्रों में तो ये अपनी उपस्थिति दर्ज करवा चुका है पर अभी ऐसे कई क्षेत्र हैं जहां इसकी उपस्थिति वांछित है।

रोबोट काम कैसे करता है :

अब तक हमने यह जाना कि रोबोट क्या है, लेकिन रोबोट काम कैसे करता है? यह जानना भी जरूरी है।

हमने कंप्यूटर अवश्य देखा होगा, जिसमें विभिन्न पार्ट्स होते है, जैसे माउस, कीबोर्ड, मॉनीटर, सीपीयू इत्यादि। इन सभी पार्ट्स की मदद से आप कंप्यूटर को चला सकते है। इसी तरह रोबोट भी अनेक अलग-अलग अंगों की मदद से काम करता है।

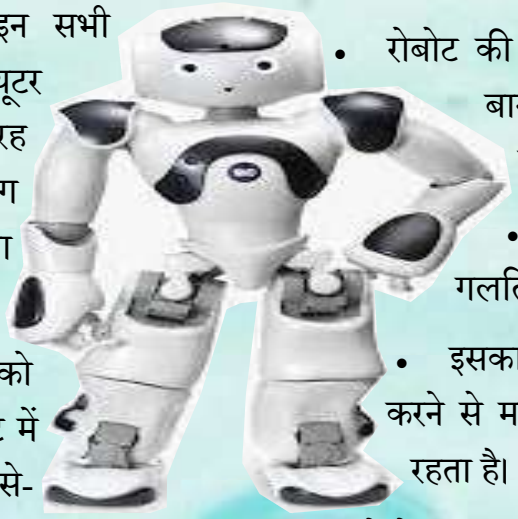

अलग-अलग टास्क को पूरा करने के लिए एक रोबोट में अनेक अंग लगे होते हैं, जैसे- ब्रेन सिस्टम, मसल सिस्टम, स्ट्रचरल बॉडी, पॉवर सिस्टम, सेंसर सिस्टम.

इन सभी आधारभूत अंगों की मदद से कोई भी रोबोट हरकत करता है। एक रोबोट में मोटर, सेंसर, पॉवर सोर्स और कंप्यूटर ब्रेन होते हैं, जो रोबोट बॉडी को नियंत्रित करते हैं। रोबोट को मनुष्य के द्वारा सॉफ्टवेयर की मदद से कुछ निर्देश दिये जाते है, जिसके अनुसार रोबोट कार्य करता है।

रोबोट के हर कार्य के लिए डिजिटल प्रोग्राम बनाया जाता है और उसे रोबोट में फिक्स किया जाता है। ध्यान दे कि सभी रोबोट में सेंसर नही होते हैं, लेकिन कुछ रोबोट सेंसर की मदद से सुनने, सूंघने की क्षमता रखते हैं।

रोबोट के फायदे

रोबोट एक स्वचालित मशीन होती है, जो मनुष्य के प्रोग्राम के आधार पर सटीकता से और तेजी से काम करती है। इसके अनेक फायदे देखने को मिलते हैं, जैसे- रोबोट के उपयोग से समय की काफी बचत होती है।

- ज्यादा बड़े और खतरनाक कार्यों को रोबोट के द्वारा किया जा सकता है।
- रोबोट की मदद से किसी भी कार्य को बारीकी और शुद्धता से किया जा सकता है।
- रोबोट की तकनीक में गलतियां न के बराबर होती है।
- इसका उपयोग खतरनाक जगह पर करने से मानवीय जान का जोखिम नही रहता है।
- रोबोट की मदद से किसी भी कार्य को बहुत जल्द और तेजी से किया जा सकता हैं।
- यह रोबोट बिना रुके और बिना थके लगातार काम कर सकते हैं।
- रोबोट Consistency (ध्यान लगाकर) काम कर सकता है, क्योंकि रोबोट को मनुष्य की तरह आपातकाल की स्थिति का सामना नही करना पड़ता है।

रोबोटों के द्वारा खाना पहुंचाना अब काल्पनिक विज्ञान नहीं रहा। अमेरिका और ब्रिटेन समेत कई देशों में सैकड़ों छोटे-छोटे रोबोट कॉलेज परिसर में और दूसरी जगहों पर भी दिखाई दे रहे हैं।

कोरोना वायरस महामारी की वजह से पैदा हुई श्रमिकों की कमी और संपर्क रहित डिलीवरी के प्रति लोगों के झुकाव में बढ़त की वजह से रोबोटों को और तेजी से इस्तेमाल में लाया जा रहा है। स्टारशिप टेक्नोलॉजीज ने हाल ही में 20 लाख डिलीवरियाँ पूरी कीं।

कंपनी के सीईओ एलेस्टेयर वेस्टगार्थ कहते हैं, "रोबोट की मांग छत फाड़ कर निकल गई। मुझे लगता है यह मांग हमेशा से थी, लेकिन महामारी के असर ने इसे तेज कर दिया।" 2019 में स्टारशिप के पास सिर्फ 250 रोबोट थे, लेकिन अब 1,000 से भी ज्यादा हैं। कंपनी जल्द सैकड़ों और रोबोटों को काम पर लगाएगी।

रोबोटों के डिजाइन अलग अलग हैं। जैसे कुछ के चार पहिए हैं तो कुछ के छह। लेकिन सामान्य तौर पर फुटपाथ पर चलने के लिए सभी कैमरों, सेंसर, जीपीएस और कभी कभी लेजर स्कैनरों का भी इस्तेमाल करते हैं। ये पांच किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलते हैं और अपने आप सड़क भी पार कर लेते हैं।

दूर से इन्हें चलाने वाले एक ही समय में कई रोबोटों पर नजर रखते हैं, लेकिन उनका कहना है कि उन्हें शायद ही कभी ब्रेक लगाने की या किसी रास्ते में किसी बाधा को पार कराने की जरूरत पड़ती है। जब रोबोट अपने गंतव्य पर पहुंचता है, तब ग्राहक अपने फोन में एक कोड डाल कर रोबोट का ढक्कन खोल सकता है और अंदर से खाना निकाल सकता है।

हालांकि इन रोबोटों में कुछ कमियां हैं जिनकी वजह से इनकी उपयोगिता अभी सीमित है। ये बिजली से चलते हैं इसलिए इन्हें नियमित रूप से चार्ज करने की जरूरत पड़ती है। ये धीमे होते हैं और सामान्य रूप से एक छोटे, पहले से मैप किए गए घेरे में ही रहते हैं। ये स्थिति के अनुरूप ढल भी नहीं सकते।

उदाहरण के तौर पर एक ग्राहक एक रोबोट को खाना दरवाजे के बाहर रखने के लिए नहीं कह सकता है। और न्यूयॉर्क, बीजिंग, सैन फ्रांसिस्को जैसे भीड़-भाड़ फुटपाथ वाले कुछ बड़े शहर तो इनके लिए ठीक हैं भी नही।

AI तकनीक पर आधारित रोबोट काफी ज्यादा आधुनिक होंगे, जो अपने दिमाग का 100% उपयोग कर सकते है। और इससे वे कुछ ही समय में मानव से अधिक काम कर सकते है। ऐसे रोबोट के कारण मानव जीवन खतरे में पड़ने की संभावना अधिक है।

अगर आप AI तकनीक पर आधारित रोबोट का उदाहरण देखना चाहते है तो गूगल को देख सकते हैं। क्योंकि गूगल पूरी दुनिया के लोगों के दिमाग को समझता है और उसके बाद गूगल पर पूछी गयी जानकारियों का जवाब देता है। गूगल

अनगिनत डाटा को सुरक्षित रखता है और उपयोगकर्ता को पेश करता है। इसके अलावा गूगल AI के द्वारा यूजर के दिमाग को पढ़ने तक की क्षमता रखता है।

भविष्य में रोबोट का उपयोग सर्वाधिक किया जा सकता है, जिससे हर क्षेत्र में रोबोट देखने को मिलेंगे। रोबोट काफी मजबूत होने के साथ-साथ जल्दी से निर्णय भी लेता है। आप रोबोट के कारण बदलती दुनिया साइन्स फिक्शन मूवीज में देख सकते हैं।

विदेशों में तो कई ऐसे रेस्टोरेंट्स हैं जहां वेटर की जगह खाना परोसने का जिम्मा रोबोटों पर होता है। अब आप भारत में भी रोबोट से सर्विस लेने के लिए तैयार हो जाएं क्योंकि चेन्नई के कोयंबटूर में एक ऐसा रेस्टोरेंट लॉन्च किया गया है जिसमें वेटर की जगह रोबोटों होंगे जो कस्टमर से ऑर्डर लेंगे और उस ऑर्डर को पूरा कर, उन्हें सर्व भी करेंगे।

इस रेस्टोरेंट में ग्राहक द्वार आईपैड पर ऑर्डर करने के लिए का इस्तेमाल करते हैं। ऑर्डर तैयार होने के बाद उसे ट्रे पर रख दिया जाता है फिर रोबोटों उस ऑर्डर को प्लेस कर देते हैं। इन रोबोटों को इस तरह से प्रोग्राम किया गया है कि ये निश्चित टेबल तक आसानी से खाना पहुंचा सकते हैं, इसके बावजूद टेबल के पास वेटर मौजूद रहते हैं, जोकि खाने को ट्रे से उतारकर टेबल पर रख देते हैं। एक रोबोट की कीमत सात लाख रुपये है।

नोएडा के सेक्टर-104 में स्थित द येलो हाउस (The Yellow House) नाम के रेस्टोरेंट में रोबोटों के जरिए खाना लोगों तक परोसा जा रहा है।

जोधपुर शहर में भी रोबोट वाला रेस्टोरेंट शुरू हुआ है। रोबोटिक रेस्टोरेंटों का लोगों में काफी ललक है।

जयपुर की टोंक रोड पर खुला 'द रोबोट रेस्टोरेंट' ग्राहकों को खाना परोसने से लेकर बिल देने और उनके साथ सेल्फी लेने तक का काम रोबोट सहज कर रहे हैं। यही नहीं बल्कि द रोबोट रेस्टोरेंट के रोबोट ग्राहक की फोटो खींचकर उसके मोबाइल पर भेज भी देते हैं। इस तरह का यह राजस्थान का पहला होटल है।

आज भारत रोबोटिक्स के क्षेत्र में दुनिया के साथ कदमताल कर रहा है। अपना देश कई देशों में रोबोटों की आपूर्ति कर रहा है।

यद्यपि रोबोट का अविष्कार मानव मन की ही कल्पना है पर कौन जाने कि कल ये इंसान से भी आगे निकल जाए। तब के खतरे और सुविधाओं के प्रति हमें सचेत रहना होगा।

डॉ. रेखा जैन
गणेश नगर, नई दिल्ली

रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 148वीं बैठक (दिनांक 28 अगस्त, 2023) की झलकियां

तारीख

संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु समय-समय पर जारी किए जाने वाले अनुदेशों को कारगर ढंग से क्रियान्वित करने के लिए भारत सरकार के मन्त्रालयों/विभागों में **राजभाषा कार्यान्वयन** समितियां गठित करने का निर्णय गृह मन्त्रालय के दिनांक 25.10.1969 के कार्यालय ज्ञापन सं 5/69/69-राम्भा के अंतर्गत लिया गया था

हिंदी पखवाड़ा

रेलवे बोर्ड

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) में दिनांक 14 से 27 सितंबर, 2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान बोर्ड कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों में हिंदी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से, विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार, पखवाड़े का शुभारंभ 14 सितम्बर, 2023 को अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में प्रतिभागिता करके किया गया। यह सम्मेलन राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 14-15 सितंबर, 2023 को पुणे में आयोजित किया गया था।

बोर्ड कार्यालय में 14 सितंबर, 2023 को माननीय गृह मंत्री जी एवं रेल मंत्री जी के "हिंदी संदेश" का वाचन किया गया। इसी दिन '**ऑनलाइन पटलों (प्लेटफार्मों) पर हिंदी के बढ़ते कदम' और आज के जमाने में साहित्य पढ़ने-सुनने की आवश्यकता**' विषय पर 'हिंदी निबंध प्रतियोगिता' तथा 18 सितंबर, 2023 को **"हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता"** का आयोजन किया गया।

उद्घाटन समारोह के अवसर पर संयुक्त निदेशक, राजभाषा द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं संदेश वाचन (14.09.2023)

हिंदी निबंध प्रतियोगिता

हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

हिंदी वाक प्रतियोगिता :

19 सितंबर, 2023 को **'हिंदी वाक् प्रतियोगिता'** का आयोजन किया गया जिसमें **"देश के विकास में अंग्रेजी बाधक और भारतीय भाषाएँ सहायक हैं'** विषय पर प्रतिभागियों ने अपने विचार व्यक्त किए।

हिंदी कार्यशाला :

20 सितंबर, 2023 को पूर्वाहन में श्री नरेश कुमार, उपनिदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली, ने **"कार्यालयीन अनुवाद की समस्याएं और समाधान"** के संबंध में श्रोताओं को महत्वपूर्ण जानकारी दी। तत्पश्चात, निदेशक (राजभाषा), डॉ. बरूण कुमार ने **"शुद्ध हिंदी कैसे लिखें"** नामक विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

साहित्यकारों की जयंती :

22 सितंबर, 2023 को रेल भवन के सम्मेलन कक्ष में कविवर **रामधारी सिंह 'दिनकर'** एवं राष्ट्रकवि **श्री मैथिलीशरण गुप्त जी** की संयुक्त जयंती एवं उनके साहित्य से संबंधित प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित श्रीमती अल्पना मिश्र, प्रोफेसर (हिंदी विभाग), दिल्ली

विश्वविद्यालय ने **श्री मैथिलीशरण गुप्त** तथा निदेशक (राजभाषा) ने कविवर **रामधारी सिंह 'दिनकर'** जी के जीवन एवं कृतित्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

जयंती के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते कार्यपालक निदेशक, स्था. (श्र.का.) एवं अन्य अधिकारी तथा अपना व्याख्यान देते आमंत्रित वक्ता

हिंदी संगोष्ठी :

25 सितंबर, 2023 को एक **'संगोष्ठी'** का आयोजन किया गया जिसमें श्री आलोक श्रीवास्तव, महाप्रबंधक, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, नोएडा ने **'ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक परिदृश्य और भारत'** पर व्याख्यान दिया इसके बाद डॉ. अतुल गुप्ता, मुख्य चिकित्सक, उत्तर रेलवे केंद्रीय चिकित्सालय, नई दिल्ली ने **"हमारी जीवन शैली और स्वास्थ्य प्रबंधन"** विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बहुत ही उपयोगी जानकारी दी।

संगोष्ठी में व्याख्यान देते हुए आमंत्रित वक्तागण एवं उपस्थित अधिकारी/कर्मचारी

अंताक्षरी प्रतियोगिता :

26 सितंबर, 2023 को बोर्ड कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए **'अंताक्षरी प्रतियोगिता'** का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी शब्द ज्ञान को बढ़ावा देने के साथ-साथ हिंदी गानों के माध्यम से हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने का उल्लेखनीय प्रयास किया गया।

अंताक्षरी प्रतियोगिता में भाग लेते हुए बोर्ड कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी

पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह :

27 सितंबर, 2023 को पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह का आयोजन किया गया इसका आरंभ रेलवे बोर्ड के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा एक संगीत कार्यक्रम की प्रस्तुति के साथ हुआ। इसमें आकर्षक गीतों, बांसुरीवादन एवं तबले की संगत ने श्रोताओं का मन मोह लिया।

संगीत संध्या के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए अधिकारीगण तथ अपनी प्रस्तुति देते हुए

तत्पश्चात, हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं रेलवे बोर्ड की विभिन्न पुरस्कार योजनाओं जैसे प्रेमचंद पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक लेखन पुरस्कार, रेल मंत्री राजभाषा शील्ड/ट्रॉफी एवं चल वैजयंती पुरस्कार योजना तथा राजभाषा व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना के पुरस्कार विजेताओं को महानिदेशक (मानव संसाधन) के कर-कमलों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए महानिदेशक (मानव

हिंदी दिवस मनाने की आधिकारिक तौर पर शुरुआत 14 सितंबर 1953 को हो गई थी। 1953 में भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने संसद भवन में 14 सितंबर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। इसके बाद से हर साल इस दिन को राष्ट्रीय हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

रेलें एवं उपक्रम

राइट्स:

राइट्स लिमिटेड में 14 सितम्बर से 29 सितम्बर, 2023 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी निबंध, टिप्पण-आलेखन, हिंदी टाइपिंग, वाक् एवं कविता पाठ प्रतियोगिताओं के साथ-साथ राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की जयंती के अवसर पर साहित्यिक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। 29 सितम्बर, 2023 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, राइट्स की अध्यक्षता में राइट्स राजभाषा कार्यान्यन समिति की त्रैमासिक बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने प्रतियोगिताओं एवं वार्षिक प्रोत्साहन योजनाओं के पुरस्कार विजेताओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए।

उत्तर पश्चिम रेलवे:

दिनांक 14 सितम्बर से 29 सितम्बर, 2023 तक उत्तर पश्चिम रेलवे में राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान 18 सितम्बर से विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा हिंदी काव्य पाठ का आयोजन किया गया। 27 सितम्बर को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर तत्कालीन महाप्रबंधक, श्री विजय शर्मा ने अधिकारी/कर्मचारियों को पुरस्कृत किया। पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर त्रैमासिक हिंदी ई -पत्रिका' मरुधरा' का 25वां अंक श्री विजय शर्मा तत्कालीन महाप्रबंधक द्वारा जारी किया गया। मुख्यालय के साथ-साथ उत्तर-पश्चिम रेलवे के अधीनस्थ विभिन्न मंडलो में भी राजभाषा पखवाड़ा बड़े उत्साह के साथ मनाया गया।

दक्षिण मध्य रेलवे:

गृह मंत्रालय तथा रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार दक्षिण मध्य रेलवे के मुख्यालय में 14 से 29 सितम्बर, 2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसमें राजभाषा से संबंधित प्रतियोगिताओं के साथ-साथ हिंदी कार्यशाला (दिनांक 20.09.2023), कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की जयंती (दिनांक 22.09.2023), क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 179वीं बैठक (दिनांक 27.09.2023) आदि जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। अंतत: दिनांक 09.10.2023 को मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूर संचार इंजीनियर श्री जी. के. द्विवेदी जी की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे, श्री अरुण कुमार जैन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता

हिंदी प्रश्न मंच प्रतियोगिता

हिंदी कार्यशाला

दिनकर' जयंती

पुरस्कार वितरण समारोह

भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी, वड़ोदरा:

भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी ,वडोदरा में दिनांक01.09.2023 से 20.09.2023 तक राजभाषा पखवाड़ा समारोह-2023 का आयोजन किया गया जिसके तहत विभिन्न प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दिनांक 20.09.2023 को राजभाषा पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण तथा काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।

कुत्ते का कुत्तापन

बचपन से ही कुत्ते के बारे में आप सभी ने निबंध लिखा- पढ़ा होगा, देखा तो खैर सभी ने होगा।

कुत्ते की विशेषताओं से भी आप भली-भाँति परिचित होंगे। यह एक ऐसा जानवर है जो स्वामी भक्त भी है और कर्त्तव्यपरायण भी। फिर भी मैं बचपन में यह नहीं समझता था कि 'कुत्ता' शब्द गाली के रूप में क्यों इस्तेमाल किया जाता है। कोई यदि चापलूस या चाटुकार किस्म का व्यक्ति हो या दोषपूर्ण व्यवहार वाला हो तो उसकी तुलना झट से कुत्ते से कर दी जाती है। एक फ़िल्मी गीत की कुछ पंक्तियाँ भी ध्यान आ रही हैं- 'ये सेवक हैं स्वामी का, रिश्तेदार हैं टॉमी (कुत्ते) का, अच्छा इनका काम नहीं, पर ये नमक हराम नहीं' यानि यहाँ भी दोषपूर्ण व्यवहार वाले व्यक्ति की तुलना कुत्ते से की गई। लेकिन एक बात ये भी है कि कुछ लोग इस टाइप के भी होते हैं जिनको कुत्ता कहना कुत्ते के कुत्तेपन का भी अपमान है।

फिल्मों की बात चली है तो बचपन में 'कुत्ते' के बारे में सुना हुआ एक प्रसंग आप के समक्ष रखना चाहूँगा- "उन दिनों 'शोले' फिल्म नयी नयी चित्रपटों पर चल रही थी तो दो कुत्तों ने भी फिल्म देखने का विचार किया। सिनेमा हॉल में भीड़ जबरदस्त थी तो दोनों कुत्तों ने विचार किया कि यार हमारे पास टिकट है नहीं और इंसान हमें देंगे भी नहीं तो एक काम करते हैं छुपकर कहीं से हम लोग भी फिल्म देख ही लें। ऐसा करते हैं कि हम दोनों में से एक फिल्म देखेगा और एक बाहर रहेगा। दोनों की सहमति हुई और एक कुत्ता अन्दर चला गया। आधे से अधिक फिल्म बीत जाने पर अन्दर वाला कुत्ता दौड़कर बाहर आ गया तो दूसरे ने पूछा कि क्या हुआ तो उसने बताया कि 'वीरू' बसंती को बोल रहा था 'इस कुत्ते के सामने मत नाचना बसंती' तुम ही सोचो अगर मैं वहीं रहता तो हीरोइन कैसे नाचती। फिर कहीं मै पकड़ा जाता तो मार पड़ती सो अलग। दूसरा कुत्ता बोला 'तुम तो जन्मजात बेवकूफ हो, अब देखो मैं जाऊंगा और पूरी फिल्म देखकर ही आऊंगा'। दूसरा कुत्ता भी अन्दर चला गया लेकिन थोड़ी ही देर में दुम दबाकर डरते और हांफते हुए बाहर आ गया। अब पहले वाले ने पूछा कि क्या हुआ तो उसने बताया कि अरे यार तुम थे तो सिर्फ नाचने से मना किया था लेकिन अब तो 'वीरू' कह रहा था 'कुत्ते मैं तेरा खून पी जाऊंगा'। अगर मैं वहीं रहता तो जान के भी लाले पड़ जाते इसलिए वहां से भाग आया। दोनों कुत्ते मन मारकर वहां से चले गए।

ये तो उस 'प्रसंग' की बात हुई जो मैंने बचपन में सुनी थी, शायद आपने भी सुनी हो लेकिन आमतौर पर कुत्ता स्वामिभक्ति और ईमानदारी के प्रतीक के रूप में ही जाना जाता है। इसमें संशय भी नहीं है लेकिन लोग 'कुत्ता' शब्द

ही गाली समझते हैं। हाल के दिनों में 'पिटबुल' नस्ल के कुत्ते द्वारा अपने ही स्वामी की हत्या करने की घटना सामने आई थी। लेकिन ये अपवाद है, सभी नस्ल के कुत्ते तो ऐसा नहीं करते फिर 'कुत्ता' शब्द गाली क्यों? इसका पूरी तौर पर तो नहीं पर आंशिक रूप से जवाब मुझे तब मिला जब मै 'आकाशवाणी' दरभंगा में बतौर कंपीयर (रेडियो जॉकी) काम करता था।

हुआ यूँ कि उस दिन कार्यक्रम के रात्रिकालीन प्रसारण के पश्चात घर लौट रहा था तो मैंने देखा कि छोटे से जंगलनुमा रास्ते के किनारे एक कुत्ता सोया हुआ था और एक सियार उसके पास जाने की कोशिश कर रहा था। कौतुहलवश मैं देखता रहा पर इसके आगे कुछ हो नहीं पा रहा था। बाद में सियार वहाँ से खिसक गया और कुत्ता भी उठकर जैसे मन मसोसता हुआ वहाँ से चल दिया।

थोडा दिमाग लगाने पर मुझे बाद में समझ में आया कि ऐसा हुआ है कि सियार यह सोच रहा था कि यह (कुत्ता) कब गहरी नींद में चला जाए और मैं इसके पास जाकर इसका सर फाड़ कर खा जाऊं और कुत्ता सोच रहा था कि यदि मेरे सोने का बहाना करने पर यह (सियार) मेरे नजदीक आ जाए तो आज की दावत पक्की है, पर दोनों बिरादर (कुत्ते और सियार) के चौकन्नेपन की वजह से यह संभव न हो सका। और अब मैं थोड़ा थोड़ा समझ चुका था कि वास्तव में कुत्ता शब्द गाली के रूप में क्यों इस्तेमाल किया जाता है। फिर भी एक बात अवश्य कहूँगा कि ये गुण कुत्ते को कहीं से भी नीच साबित नहीं करते बस उसकी चालाकी को दर्शाता है और उसकी चालाकी को गलत भी नहीं कह सकते क्योंकि ईश्वर/प्रकृति ने जीने के लिए सभी को कुछ न कुछ गुण दिए हैं और प्रकृति प्रदत्त गुण को नकारात्मक रूप से क्यों देखा जाए। आप भी इस पर सोचिएगा जरुर और यदि इस बारे में कुछ भी पता चले कि 'कुत्ता' शब्द गाली के रूप में क्यों इस्तेमाल होता है तो मुझसे जरुर साझा कीजियेगा।

- प्रशांत प्रखर

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

शांतिलाल जोशी

क्षमा का पर्व : पर्युषण

पर्युषण पर्व जैन धर्म का महान पवित्र पर्व है। यह सत्य, अहिंसा और प्रेम का प्रतीक है। यह प्रतिवर्ष साज सज्जा के साथ आता है। जैन समाज में पर्युषण पर्व का इतना आकर्षण व उत्साह होता है कि कभी धर्म आराधना न करने वाला व्यक्ति भी 8 या 10 दिनों में स्थानक में मंदिर में जाते हैं। अपना कारोबार कम या बंद कर देते हैं बहुत ही संयमित जीवन व्यतीत करते हैं।

पर्युषण पर्व में अंतिम दिवस संवत्सरी का बहुत ही महत्वपूर्ण है। संवत्सरी का अर्थ है वर्ष का अंतिम दिन। इस दिन साल भर का हिसाब किताब पूरा कर लेना है। वर्ष भर में व्यक्ति ने जिससे भी बैर विरोध किया हो उसे संवत्सरी के दिन क्षमा कर देता है या क्षमा मांग लेता है। यह जैन संस्कृति का मंगल पर्व है तथा इसे पर्वाधिराज की संज्ञा से विभूषित किया गया है इस दिन समग्र जैन समाज बैर, कटुता, द्वेष भूलकर तथा आडंबर अभिमान त्याग कर आपस में क्षमा का आदान प्रदान करते हैं।

यह "खमतखामणा" के नाम से भी जाना जाता है। इसका अर्थ है क्षमा का आदान प्रदान, आत्म शोधन, आत्मा पर्यालोचन। आत्म निरीक्षण करके अपने अतीत दोषों के परित्याग करने में ही इस पर्व की सार्थकता है। क्षमा एक ऐसा शब्द है जो स्वयं में व्यक्तिगत अथवा अन्य जनित समस्त त्रुटियों को समाहित कर उसे निर्विकार करने की क्षमता रखता है। आपसी सौहार्द, प्रेम, अहिंसा, शान्ति व बंधुत्व का स्वस्थ व स्वच्छ वातावरण निर्मित करते हैं। क्षमा को व्यवहार व आचरण में लाने के लिए सभी संतो, धर्माचार्यों, जैन आगमों व ग्रंथो ने जोर डाला है। प्राचीन पारसी धर्म, बौद्ध धर्म में भी क्षमा को महत्व प्रदान किया गया है। जरथुस्त्र ने बिना क्षमा वाले धर्म को धर्म नहीं माना है। क्षमा मांगने से मन का मैल धुल जाता है। आत्मिक संतोष प्राप्त होता है। क्षमा सबको सुख व आनंद देता है। मन को गंगा की तरह पवित्र और व्यक्तित्व को हिमालय की तरह ऊंचा उठाती है। क्षमा त्याग है, क्षमा तपस्या है, क्षमा सकल मनोरथ सिद्ध करने वाला कल्पवृक्ष है। क्षमा व्यक्ति को भयमुक्त बनाता है, क्षमा जीवन जीने की कला है, जीवन का अमर राग है। जो लोग अपने जीवन के अंतिम या संध्या बेला में संथारा ग्रहण करते हैं वह संपूर्ण प्राणी जगत को क्षमा कर देते हैं। जैन मतावलंबी प्रायः उभयकाल प्रतिक्रमण करते हैं उसमें भी यह पंक्तियां पढ़ी जाती है-

"खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जी वाह खंमतु में।
मित्ती में सव्वभउएसउ,वैर मज्झं न केणई।।"

मैं सब जीवों को क्षमा करता हूं। सब जीव

मुझे क्षमा करें। मेरा किसी के साथ बैर नहीं है। सभी जीव के साथ मेरी मैत्री है श्री मद उत्तराध्यनन सूत्र के 29 वें अध्याय में उल्लेख है कि *"खावणाए प्रसारण भाव जणयदू"* क्षमा से जीवन में एक विशिष्ट आनंद प्राप्त होता है। इसी सूत्र में आगे कहा है कि क्षमा भाव से मैत्री भाव विस्तृत होता है। राग द्वेष समाप्त हो जाता है।

एक मनुष्य 66 करोड़ मासोपवास करता है और दूसरा मनुष्य एक कटु वचन शांत भाव से सहन करता है तो उसका फल 66 करोड़ मासोपवास से भी अधिक होता है। भगवान महावीर ने कहा था *"खन्तईएं णं परिसे ह निवाई"* अर्थात क्षमा से परिबलों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। आचार्य उमास्वाति के शब्दों में "क्षमावान व्यक्ति ही धर्म के मूल दया की साधना कर सकता है। तथागत बुद्ध ने क्षमा को *"परम तप"* की संज्ञा देते हुए कहा है *"खंति परम तपो तितिक्ख"* क्षमा परम तप है महर्षि वाल्मीकि ने क्षमा को सर्वोच्चता प्रदान करते हुए कहा-

क्षमा दान क्षमा सत्यं क्षमा यज्ञश्च: पुत्रिका:।
क्षमा यक्षों क्षमा धर्म: संत याविशिष्टत जगत।।

अर्थात क्षमा ही दान है, क्षमा ही सत्य है, क्षमा ही यज्ञ है, क्षमा ही मूर्ति है, क्षमा ही धर्म है। सारा जगत क्षमा में अधिष्ठित है। महर्षि व्यास के शब्दों में *"क्षमा तेजस्विनां तेज: क्षमा ब्रहम तपस्विनाम"*। क्षमा के संबंध में आचार्य विमल सागर जी ने कहा है *"जीवन पथ इतना लंबा अटपटा है कि यदि उसे क्षमादान से बार-बार बुहारा न जाए तो वह कूड़ेदान बन जाएगा।"*

अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति और विश्व भर में स्वतंत्रता और समानता के प्रतीक पुरुष श्री नेल्सन मंडेला ने अफ्रीकी जैन धर्म की एक सभा में कहा था कि क्षमापना दिवस को अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मान्यता दी जानी चाहिए। कल्पसूत्र में क्षमा का महत्व बताया गया है। 8 दिन तक चलने वाले प्रवचन में प्रतिक्रमण, पौषध, स्थानक में होने वाले शास्त्र वचन मंदिरों में होने वाली प्रभु भक्ति रात्रि जागरण आदि समस्त धार्मिक क्रियाकलापों का मूल लक्ष्य उत्तर में रहे हुए पाप कर्म, काम, क्रोध, मद लोभ, आदि मलीनता को नष्ट कर क्षमा, नम्रता, विवेक आदि के माध्यम से आत्मोथान है। वर्तमान में पर्युषण का महत्व समझकर वास्तविक क्षमापना से आत्मा को पवित्र और निर्मल बनाएं और मोक्ष के अधिकारी बने। यही पर्युषण पर्व का संदेश है।

अभय कुमार जैन

भवानी मंडी राजस्थान

जासु नाम जपि सुनहु भवानी।
भव बंधन काटहिं नर ग्यानी।।
तासू दूत कि बंध तरू आवा।
प्रभु कारज लगि कपिहिं बँधावा।।

भावार्थ- महादेव जी कहते है कि हे पार्वती! सुनो, जिनके नाम का जप करने से ज्ञानी लोग भवबंधन को काट देते है। उन प्रभु का दूत (हनुमानजी) भला बंधन में कैसे आ सकता है? परंतु अपने प्रभु के कार्य के लिए हनुमान ने अपने को बंधा दिया।

बूढ़ा पेड़

तने का रस-संचार सूखने लगा। छाल दरकने लगी। मोटी पतली शाखें अकड़ने लगीं। पत्ते पीले पड़े और एक-एक कर झड़ गये। एक नंगी, सूखी ठठरी बर्फीली हवाओं के थपेड़े झेलती फिर भी खड़ी रही उसके इंतजार में जो एक दिन उसकी जड़ हिलाकर उसे गिराने आएगा। तब आएगा वह लकड़हारा, अपनी कुल्हाड़ी लिए, उसकी शाखें काटने और फिर और लोग भी आ जाएंगे तेज दांतों वाले बड़े-बड़े आरे लिए उसके तने को चीरकर कुंदों में बदलने। फिर गाड़ियों में लाद कर उसके कुन्दों को मिल में पहुंचाया जाएगा। बची खुची टहनियों टुकड़ियों को तो लोग-बाग चुन कर जलावन के लिए ले ही जाएंगे।

यह सब सोचते-सोचते पेड़ गहरे सोच में डूब गया। उसे लगा, वह आगे होने वाली बातों को भी बिलकुल साफ-साफ देख रहा था, जैसे किसी बड़े आइने में अपनी ही शक्ल देख रहा हो –तब से आज तक की। तब से जब वह एक झूमता-गाता, लहराता हरा-भरा दरख़्त था, और आज का यह सूखता-उकठता उसका नंगा बदन।

वह आइने को ध्यान से देखने लगा। उसके कुंदे जब मिलों में पहुंचे थे तो वहां बहुत दिनों तक यो ही पड़े रहे थे- जब तक उनके भीतर का बूंद-बूंद रस सूख नहीं गया। उसके सभी कुंदों को एक पर एक सजा दिया गया था और उन पर कुछ निशान लगाए गए थे। जब बारिश होती थी तो वे भीग जाते थे, फिर धूप उन्हें सुखा देती थी। कुछ दिन बाद उन्हें ले जाकर पास के बड़े टीन की छत वाले गोदाम में रख दिया गया था। वहां कीड़े, गिलहरियां बिच्छू और सांप सभी आकर उनके आस-पास चक्कर लगाया करते लेकिन इससे उनका मन कुछ ही बहलता।

गोदाम से अक्सर मजदूर कुंदों को ले जाकर बड़ी बड़ी आरा मशीनों पर डाल देते। आरा मशीन बड़ी सफाई से देखते-देखते उन कुंदों को चीर-चीर कर लम्बे-लम्बे तख्तों में बदल देती। लेकिन जब कुदों के जिस्मों की चीर कर तख्तों में बदलने का काम चलता होता तो शोर इतना ज्यादा, इतना कर्कश होता कि टीन की सारी छत और पूरे गोदाम की लकड़ियों के पोर पोर थरथराने लग जाते। फिर काम में लगे सारे मजदूरों का ज़ोर-ज़ोर का हो-हल्ला, गाली-गलौज, सब उस शोर में मिलकर उसको और असहनीय बना देते। लेकिन यह सब तो वहां सुबह से रात तक चलता ही रहता था, और वहां सब लोगों को इसकी आदत पड़ चुकी थी।

उसने यह भी देखा कि उसके सभी कुंदों को एक दिन चीर-चीर कर तख्तों में तब्दील कर दिया

गया था। अब उसके तख्ते भी बाज़ार में बिकने को तैयार हो चुके थे। सब पर नंबर लगाए जा चुके थे। मैनेजर ने उन्हें एक सिलसिले से उनकी जगह पर रखवा भी दिया था। मिल मालिक अपने केबिन में कंप्यूटर के सामने उसकी ख़रीद-फ़रोख्त का हिसाब भी लगाने लगा था। पेड़ को लगा-चिड़िया की चोंच में लाए बीज से धीरे-धीरे जमीन से फूटे एक पौधे से बढ़ कर एक जवान लहराते हरियाले दरख्त ने उस पेड़ की कहानी, उनकी अपनी कहानी, यों ही खतम हो चुकी थी। अब तो उसकी याद शायद किसी मेज-कुर्सी या दरवाजे में ही सिमट कर रह जाती, या शायद हमेशा के लिए मिट ही जाने वाली थी।

लेकिन बूढ़े पेड़ ने सोचा, उसकी अपनी यही कहानी तो उस लकड़हारे और उस मिल मालिक के जीवन की कहानी भी थी। या उन मजदूरों की जिनकी रोज़ी-रोटी उस तेज़ दांत वाले खूंखार आरा मशीन से चलती थी, या फिर उस मोल-तोल, नाप-जोख करने वाले खरीददार की जिसने उन तख्तों को अपने हिसाब से सस्ते में खरीदा था, हालांकि मालिक अपने मुनाफे से काफी खुश लगा था। और यही मोल-भाव, यही नफा-नुकसान, यही सारा लेन-देन तो इस जीवन की कहानी है, बूढ़ा पेड़ सोचता रहा।

इस तरह की बातें अब इस उम्र में वह बूढ़ा पेड़ अक्सर सोचा करता। इस बुढ़ापे में अब वह बिलकुल अकेला हो चुका था। अब उसकी सूनी डालों पर चिड़ियों की चहचहाहट कहाँ होती थी। हवा भी अब हरियाले पेड़ों की ओर ही अपना रुख ज्यादा रखती थी। उसके पास से कभी गुजरती भी तो चुपचाप आगे बढ़ जाती अब उसकी डालों में पत्ते भी कहाँ बचे थे, रुक-रुक कर जिनसे हवा उनका गीत सुनती। अब तो कभी-कभार, इक्के-दुक्के कोई चिड़िया उड़ते-उड़ते उसकी किसी ऊँची डाल पर आकर थोड़ी देर सुस्ता लेती थी, और फिर तुरत उड़ जाती थी।

इधर उसने देखा था, कोई चील आती, या एक बड़ा-सा गिद्ध जरूर उसके सिर की डाल पर आकर अक्सर बैठ जाता था, और बड़ी देर तक बैठा-बैठा न जाने क्या सोचा करता था। उसे लगा, कोई राहगीर भी अब उसके तले आकर कहाँ बैठता-सुस्ताता था, क्योंकि अब तो वह सिर्फ एक बूढ़ा, सूखा, बिना पत्तों का ठठरीनुमा पेड़ ही रह गया था। .....

लेकिन वह सोचता रहा बचपन से बुढ़ापे तक उस पेड़ ने किसी से कुछ लिया नहीं था, सबको कुछ न कुछ दिया ही। हर साल मौसम में अपने फूल-फल, थके मुसाफिर को ठंडी छाँव, चिड़ियों को उनके घोंसले, पत्ते बटोरने वाली को रोज़ ढेर सारे पत्ते, और हवाओं को उनका संगीत। लेकिन कभी उसने खुद किसी से कुछ मांगा नहीं लिया नहीं। धूप नहीं हुई तो भी वह उतना ही मगन रहा। हवा नहीं बही तो वह चुप ही रहा। बारिश नहीं आई, प्यास लगी रही, वह इंतज़ार करता रहा। फिर जब धूप आई वह मुस्कुरा उठा। हवा बही तो खिल - खिलाकर हंस पड़ा। बारिश आई तो झूम-झूमकर नाचा, नहाया। पत्ते पत्ते को धो लिया डाल-डाल संवर गई। तारे उग आए तो गीत गुनगुनाने लगा। रात जब सोई तो ही उसे भी नींद आई।

सुबह चिड़ियों की चहचहाहट से उसकी नींद

खुली। फिर पत्ते हिला-हिलाकर उसने एक-एक पंछी को काम पर जाने के लिए विदा किया। अपना मन वह दिन भर राहगीरों की आवाजाही से बहलाता रहा। फिर दिन ढलते ही उसका अपने परिजन परिंदों का इंतज़ार सताने लगा। एक-एक कर उनका लौटना वह गिनता रहा, और तब तक उसे चैन नहीं आया जब तक उसके सारे पंछी अपने घोंसलों में आ नहीं गए और फिर तो सब ने मिल कर इतना शोर मचाया कि वह भला किसकी किसकी सुने। किसी ने किसी के मुंडेरे का हाल कहा, तो किसी ने कोई और ही दर्द भरी दास्तान सुनाई और कुछ मनचलों ने तो अजीब-अजीब कहानियां सुना कर उसका खूब मन बहलाया। फिर भी पता नहीं उस दिन दिन-भर उसका मन इतना उदास क्यों रहा था।

चिड़ियों की कहानियां सुनकर उसको लगता, रोज़ की उनकी हर कहानी तो एक ही जैसी होती, लेकिन उनके अंदर कहानी-दर-कहानी न जाने कितनी नई-नई कहानियां छिपी होती। वह सबको सुनता और गुनता रहता।

पूरे गांव से लेकर पास के शहर तक की तरह -तरह की ताज़ा ख़बरें उसको बैठे-बिठाए मिल जाती। उसके पत्ते बटोर कर ले जाने वाली जवान लड़की का हाल। उस लड़की के बूढ़े बीमार बाप का हाल जो अब सुबह से शाम तक बैठा खांसता रहता। उसके घर वाले का हाल जो पहले जंगल से लकड़ी काटकर लाता और बेचता था और अब पास के शहर में एक आरा मिल में मज़दूर का काम करता था। लकड़ी के कुंदों को गाड़ियों से नीचे उतारना, या तख्तों को ठेलों पर लदवाना, या आरा मशीन पर तख्ते चिरवाना, उनको गिनना, मालिक को हिसाब बताना। बात-बात में मालिक का उसको भद्दी गालियां देना।

गांव से लेकर शहर तक की ऐसी सारी खबरें उस बूढ़े पेड़ को रोज़ मिलती रहती थीं। अच्छी भी और बुरी भी। उसे लगा, आखिर इसी तरह तो वह बूढ़ा हुआ है। लेकिन उसे सब अच्छा ही लगता रहा। दुख-दर्द की बातें सुन कर भी अब वह बिलकुल निस्पंद रहा करता। ख़ुशी और गम के किस्से कभी उसको बहुत अलग-अलग नहीं लगते, क्योंकि रोज तो न जाने ऐसे कितने किस्से उसे सुनने पड़ते थे।

फिर उसको उस चिड़िया की याद आई जो बराबर शहर के उस लकड़ी मिल में जाया करती थी। शहर के उस लकड़ी मिल में दरख्तों के कटे कुंदों और तख्तों की खरीद-बिक्री होती है। चिड़िया वहां सब कुछ देखती रहती है, क्योंकि उसको उन मैदान में पड़े कुंदों में तरह-तरह के कीड़े खाने और घर ले आने को मिल जाते हैं, जैसे और जगह उतनी आसानी से नहीं मिलते। वहीं हुए एक दिन के हादसे का बयान करते-करते तो चिड़िया का गला एकदम रूंध आया था - जिस दिन उसने अपनी आंखों से एक मजदूर का हाथ साफ कट जाते देखा। वह एक कुंदे पर बैठी एक कीड़े को खाने जा रही थी कि उसका ध्यान बंट गया। कीड़ा तो उड़ ही गया, लेकिन उस मज़दूर की चिल्लाहट सुनकर और फौव्वारे की तरह बहता उसका खून देखकर तो चिड़िया को जैसे गश आ गया। बड़ी आरा मशीन एकाएक रूक गई, उसका भयानक शोर भी अचानक रुक गया। पूरे मिल के अहाते में अफरा- तफरी मच गई। वह डरकर ऊंचे बिजली के पोल पर जा बैठी। वहां से सब कुछ, सारी भाग-दौड़ वह डरी-डरी देखती रही उसका सारा बदन जोर-जोर से कांपता रहा। फिर वह उड़कर उस

अस्पताल तक भी गई जहां मिल मालिक ने अपने आदमियों से उस मजदूर को पहुंचाया था। बहुत देर तक चिड़िया वहीं एक दीवार पर बैठी सब कुछ देखती रही, और वह घायल मजदूर वहीं बरामदे में बेहोश पड़ा रहा। खून से उसके सारे गंदे कपड़े सन गए थे।

बहुत देर तक चिड़िया वहीं सकते में बैठी रही पर आखिर वह कब तक वहां बैठी रहती, फिर उड़ कर कहीं और चली गई। लेकिन उसका मन तब से फिर बराबर उदास ही रहा। शाम हुई और जब वह पेड़ पर अपने घोसले में बच्चों के पास आई तो उसने उदास मन से रोते-रोते यह सारी कहानी पेड़ को सुनाई। पेड़ का मन भी कुछ देर के लिए उदास हो गया लेकिन उसको तो अब तक न जाने ऐसे कितने हादसों की, कितने तरह के हादसों की कहानी सुनने को मिली थी और अब तो वह उनकी गिनती भी भूलने लगा था।

चिड़िया बाद में भी कई दिन तक उस हादसे का हाल रुँधे गले से उसको सुनाती रही थी। जिस दिन लकड़ी-मिल में यह हादसा हुआ था, वह लड़की, उस मजदूर की घरवाली भी वहां रोती-भागती गई थी। तब मिल के मालिक ने उसका कंधा पकड़कर उसको बहुत ढांढस बंधाया था और काफी रुपये भी दिए थे। फिर जल्दी-जल्दी अपने मिनी ट्रक से उस घरवाली के साथ मजदूर को अस्पताल भी भिजवाया था। चिड़िया ने यह सारी तफसील रोते- रोते पेड़ को सुनाई थी और पेड़ बेचारा बस चुपचाप अपने आंसू पीता रहा - जैसी उसकी आदत थी।

जब भी वह चिड़िया उड़ती हुई उधर जाती, कोशिश करती अस्पताल का एक चक्कर काट ले। अक्सर पत्ते बटोरने वाली वह लड़की जिसका मर्द वहां भरती था, वहां दिखाई दे जाती, लेकिन ज्यादातर रोती-बिसूरती हुई। उसको देखकर ही चिड़िया को समझना पड़ता, उसके मर्द का हाल कैसा है लेकिन यह सिलसिला कई हफ्ते तक चलता रहा। चिड़िया की उलझन बराबर बनी रही। पेड़ अपने पत्तों से सहला-सहलाकर उसको ढांढस बंधाने की कोशिश करता और समझाता कि दुनिया फ़ानी है, हादसों की एक लंबी कहानी है। हादसों की न जाने कितनी ही ऐसी कहानियां यहां रोज घटती हैं। लेकिन जिंदगी की रफ्तार इसी तरह चलती रहती है। इसी तरह रोज सुबह होती है, रोज शाम होती है। रात का अंधेरा घिरता है तो दिन का उजाला भी उस अंधेरे को मिटा देता है, रोज़-ब-रोज़। आखिर यह धरती तो न जाने कब से इसी तरह दिन और रात के बीच अनमनी-सी घूमती रही है। लेकिन इस तरह बराबर दौड़ते-नाचते हुए भी वह कहाँ थकती है, कहाँ ऊबती है। और मौसम भी तो फिर-फिर बदलते हुए भी एक-सा ही बने रहते हैं। वे कहाँ घबराते या ऊबते हैं।

चिड़िया जानती है, पेड़ की उमर उससे

बहुत ज्यादा है। अब वह धीरे-धीरे उम्रदराज़ हो रहा है। उसने बहुत दुनिया देख ली है। अब वह बूढ़ा हो चला है। लेकिन चिड़िया है कि उस हादसे से अब तक उबर नहीं पाई है। मिल में उड़कर उसका रोज जाना और कीड़े-मकोड़े चुगना तो बदस्तूर जारी है। मिल की आरा मशीनों का बेतहाशा शोर तो हर रोज उसी तरह चलता रहता है। लकड़ी के कुंदे रोज उसी तरह वहां गिरते और सजाए जाते हैं। मैनेजर उन पर उसी तरह रोज नंबर लगवाता रहता है। आरा मशीन पर कुंदे उसी तरह रोज चिरते रहते हैं। मालिक आज भी अपने केबिन में बैठा हिसाब-किताब में उसी तरह मशगूल रहता है।

लेकिन चिड़िया को अब वहां बहुत बदलाव भी नज़र आता है। जिस मजदूर की बांह कटी थी अब उसे मजदूरों का मेठ बना दिया गया है। अब उसको बैठने की एक अच्छी जगह मिल गई है। वह मिल-मालिक और मैनेजर की ही तरह अब और मजदूरों को भद्दी-भद्दी गालियां देता रहता है और अब वह लड़की, उसकी बीवी भी मिल-मालिक के केबिन में बे-रोक-टोक आती-जाती है। मालिक का खाना भी घर से अब वही लाती है, और दिन में खाना खाने के लिए जब काम बंद होता है, तो वही मालिक को टेबुल पर अपने हाथों से परसकर खाना खिलाती है। मालिक की उससे अब हंसी-ठिठोली भी खूब होती है। रोज़ बदलने वाली रंग-बिरंगी साड़ियों और गोरे- गदराए बदन पर सजे हुए जेवरों में अब वह खूब फबती है।

लेकिन चिड़िया का मन अब यह नया सब कुछ उस बूढ़े पेड़ को बताने का नहीं होता।

- मंगलमूर्त्ति

नदी हूँ मैं

नदी हूँ मैं मुस्कुराती, क्यों मुझे रुला रहे हो,
अमृत सा देती हूँ पानी, जहर मुझे क्यों पिला रहे हो।

पहाड़ों में अब सारी बर्फ है पिघल रही,
जमीन की भूख अब, मेरे किनारों को निगल रही।

सफेद चमकते मेरे पत्थर, अब हो चले है काले,
कब तक गिराओगे यूं ही, मुझमें गंदगी के नाले ?

निगले ही जा रहे हो जंगल और जमीन,
तुम्हारी इन्ही गलतियों से हूँ, मैं भी गमगीन।

लहराती, बलखाती, मुझको यूं ही बहने दो,
झीलों और तालाबों से मुझे मिल कर कुछ कहने दो।

सूखती हूँ जा रही, मेड़ों पर मेरे पेड़ लगाओ,
मेरे टूटे किनारों पर कभी तो, दया दिखलाओ।

मेरी जमीन पर रोज, बनाते जा रहे हो खेत,
छीन रहे हो मेरे आंचल से, मेरी ही सुनहरी रेत।

प्लास्टिक और गंदगी से साँसे है रुक रही,
ये देख तुम्हारी, क्या शर्म से हैं, आंखे झुक रही?

जो बात है कहनी, वो खुल कर मुझे कहने दो,
मेरी धारा को बस यूं ही..... अविरल बहने दो।

गौरव चाँदना
व. अ. अधिकारी, उत्तर रेलवे

निकम्मी औलाद

"आइए जगमोहन जी बैठिए और बताइए क्या हाल-चाल है"- अपने पड़ोसी जगमोहन सिंह को कुर्सी देते हुए गुप्ता जी ने कहा-"सब ठीक है बस आजकल घुटनों में थोड़ा दर्द बढ़ गया है... अब उम्र भी तो हो चली है... घर का राशन पानी और साग भाजी लाने में ही दम फूलने लगता है। खैर यह तो उम्र के साथ होना ही है आप अपनी बताइए अपना हाल-चाल बताइए- कुर्सी पर बैठते हुए जगमोहन बोले।

"अपना भी ठीक ही चल रहा है... खेती किसानी अच्छी चल रही है, काम चल जाता है। और आप जितना भाग्यशाली तो नहीं हूं कि जैसे आप के दोनों बेटे उच्च पदों पर कार्यरत हैं। भगवान ने एक ही औलाद दिया और वह भी निकम्मी निकली। इतना पढ़ने लिखने के बावजूद भी कहीं जाकर कुछ करने के लिए तैयार नहीं है"- अपना दुखड़ा रोते हुए गुप्ता जी बोले।

"गुप्ता जी शुक्र मनाइए कि आपके पास एक निकम्मी औलाद है जो आपकी वृद्धावस्था में कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। और आपके दुख सुख में आपका साथ देने के लिए आपके पास दिन -रात है। वरना काबिल औलादें अक्सर मां बाप के मरने के बाद पड़ोसियों के सूचना देने पर आती हैं"--- जगमोहन फीकी हंसी हंसते हुए बोले।

"बाबू जी इतना दिन चढ़ आया है अभी तक आपने अपनी दवाई नहीं ली"- गुप्ता जी का बेटा उनके हाथ में दवाई और पानी का ग्लास पकड़ाते हुए बोला।

पता नहीं जगमोहन के कहने का असर है या ऐसे ही गुप्ता जी को आज अपनी औलाद निकम्मी नहीं लग रही थी।

रेखा शाह आरबी

बलिया (यूपी)

रचनाएँ भेजने हेतु निवेदन:

- आपकी उत्कृष्ट रचनाओं का 'रेल राजभाषा' में स्वागत है।
- अपनी रचनाओं की मूल प्रति ही भेजें। लेख/कविता आदि के साथ एक घोषणा पत्र भी संलग्न करें, जिसमें यह स्पष्ट किया गया हो कि शीर्षक से शुरू होने वाला लेख/कहानी/कविता आदि मौलिक एवं अप्रकाशित है तथा इसमें दी गई सामग्री की जिम्मेदारी लेखक की है। रचनाएं यूनिकोड फॉर्मेट/मंगल में टाइप कराकर वर्ड फाइल के रूप में ही भेजें।
- पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए लेखकों और पाठकों के पत्रों एवं सुझावों का स्वागत है।
- लेखकों से अनुरोध है कि अपने नाम, पता, मोबाईल नं., ई-मेल आईडी, बैंक खाता विवरण और चेक की एक फोटोकॉपी अपनी टाइप की हुई रचना के साथ हमारे ई-मेल patrikahindi@gmail.com पर भेजें।

संपादक, रेल राजभाषा

नव वर्ष

स्वागत! जीवन के नवल वर्ष
आओ, नूतन-निर्माण लिये,
इस महा जागरण के युग में
जाग्रत जीवन अभिमान लिये;
दीनों दुखियों का त्राण लिये
मानवता का कल्याण लिये,
स्वागत! नवयुग के नवल वर्ष!
तुम आओ स्वर्ण-विहान लिये।
संसार क्षितिज पर महाक्रान्ति
की ज्वालाओं के गान लिये,
मेरे भारत के लिये नई
प्रेरणा नया उत्थान लिये;
मुर्दा शरीर में नये प्राण
प्राणों में नव अरमान लिये,
स्वागत!स्वागत! मेरे आगत!
तुम आओ स्वर्ण विहान लिये!
युग-युग तक पिसते आये
कृषकों को जीवन-दान लिये,
कंकाल-मात्र रह गये शेष
मजदूरों का नव त्राण लिये;
श्रमिकों का नव संगठन लिये,
पददलितों का उत्थान लिये;
स्वागत!स्वागत! मेरे आगत!
तुम आओ स्वर्ण विहान लिये!
सत्ताधारी साम्राज्यवाद के
मद का चिर-अवसान लिये,
दुर्बल को अभयदान,
भूखे को रोटी का सामान लिये;
जीवन में नूतन क्रान्ति
क्रान्ति में नये-नये बलिदान लिये,
स्वागत! जीवन के नवल वर्ष
आओ, तुम स्वर्ण विहान लिये!

- सोहनलाल द्विवेदी

आत्मदीप

मुझे न अपने से कुछ प्यार,
मिट्टी का हूँ, छोटा दीपक,
ज्योति चाहती, दुनिया जब तक,
मेरी, जल-जल कर मैं उसको देने को तैयार

पर यदि मेरी लौ के द्वार,
दुनिया की आँखों को निद्रित,
चकाचौंध करते हों छिद्रित
मुझे बुझा दे बुझ जाने से मुझे नहीं इंकार

केवल इतना ले वह जान
मिट्टी के दीपों के अंतर
मुझमें दिया प्रकृति ने है कर
मैं सजीव दीपक हूँ मुझ में भरा हुआ है मान

पहले कर ले खूब विचार
तब वह मुझ पर हाथ बढ़ाए
कहीं न पीछे से पछताए
बुझा मुझे फिर जला सकेगी नहीं दूसरी बार

-हरिवंशराय बच्चन

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड), नई दिल्ली